

संस्कृतभारती - सेलम्

ॐ

शिक्षा

अभ्यासपुस्तकम्

निर्माणम्

आर.शेखर्

संस्कृतभारती

सेलम्

साहायके

तामरैसेल्वि

कृत्तिका एम् मेनन्

सेलम्

विषयानुक्रमणिका

| Sl.no | विषयः  | पृष्ठ सङ्ख्या |
|-------|--|---------------|
| 1     | अधः दत्तानां कृदन्तानाम् इतरे वचने लिखत ।                | 3             |
| 2     | उचितं शल्लन्तं / शानजन्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत । | 6             |
| 3     | सत्सप्तमी रूपेण लिखतु                                    | 9             |
| 4     | सन्धिं कुरुत   | 11            |
| 5     | शुद्धम् उत अशुद्धम् इति लिखत ।                           | 26            |
| 6     | उचितम् उत्तरं चिनुत                                      | 27            |
| 7     | मेलयत  | 28            |
| 8     | अनर्हं पदम् चित्वा लिखतु                                 | 30            |
| 9     | एतानि पदानि उपयुज्य वाक्यानि रचयत                        | 31            |
| 10    | प्रश्नस्य उत्तरं ददातु                                   | 33            |
| 11    | संस्कृते अनुवादं कुरुत                                   | 36            |
| 12    | न्यायः   | 39            |
| 13    | सूक्तिः  | 43            |
| 14    | प्रहेलिका  | 46            |
| 15    | सुभाषितम्  | 51            |

संस्कृतभारती - सेलम्

अधः दत्तानां कृदन्तानाम् इतरे वचने लिखत ।

|    |            |                  |            |
|----|------------|------------------|------------|
| 1  | अनुसरन्तम् | अनुसरन्तौ        | अनुसरतः    |
| 2  |            | स्पर्धमानाभ्याम् |            |
| 3  | स्फुरन्ती  |                  |            |
| 4  |            |                  | बिभ्यत्यः  |
| 5  |            |                  | लिखत्सु    |
| 6  | कुर्वती    |                  |            |
| 7  |            | गच्छतोः          |            |
| 8  | क्रीडतः    |                  |            |
| 9  | गच्छन्ती   |                  |            |
| 10 |            | धावन्तौ          |            |
| 11 | पतते       |                  |            |
| 12 |            |                  | रुदतीः     |
| 13 | ददत्       |                  |            |
| 14 |            |                  | पतन्ति     |
| 15 | ददत्       |                  |            |
| 16 |            |                  | गच्छन्ति   |
| 17 |            |                  | एधमानाः    |
| 18 | शयानम्     |                  |            |
| 19 |            |                  | धावन्तीभिः |
| 20 | कुर्वत्याः |                  |            |
| 21 |            | गच्छतोः          |            |
| 22 |            | स्पर्धमानाभ्याम् |            |
| 23 |            |                  | वध्नन्तः   |
| 24 | कुर्वत्याः |                  |            |
| 25 |            | वन्दमाने         |            |
| 26 |            |                  | खादन्त्यः  |
| 27 | बिभ्यत्    |                  |            |
| 28 |            |                  | पतद्भिः    |
| 29 |            |                  | विकसन्ति   |
| 30 | याचमानस्य  |                  |            |
| 31 |            |                  | अधीयानेषु  |
| 32 |            |                  | अधीयानेषु  |

|    |             |             |            |
|----|-------------|-------------|------------|
| 33 | गच्छत्      |             |            |
| 34 | कुर्वत्याः  |             |            |
| 35 | बिभ्यत्     |             |            |
| 36 |             |             | पठन्तीषु   |
| 37 | ददत्        |             |            |
| 38 |             |             | वन्दमानानि |
| 39 | नृत्यन्त्यै |             |            |
| 40 |             |             | ददत्यः     |
| 41 | कुर्वता     |             |            |
| 42 |             |             | रुदतीः     |
| 43 |             | स्मरन्त्योः |            |
| 44 | भाषमाणे     |             |            |
| 45 |             |             | क्रीडत्सु  |
| 46 | ददत्        |             |            |
| 47 | प्रचलतः     |             |            |
| 48 | विहरन्तम्   |             |            |
| 49 | वहन्त्याम्  |             |            |
| 50 |             |             | लिखत्सु    |
| 51 |             |             | कूजतः      |
| 52 | कुर्वती     |             |            |
| 53 | ददत्        |             |            |
| 54 | ददत्        |             |            |
| 55 | बिभ्यत्     |             |            |
| 56 | क्रीणती     |             |            |
| 57 |             |             | पठितवतीभिः |
| 58 |             |             |            |
| 59 |             | स्मरन्तौ    |            |
| 60 |             |             | जीवन्तः    |
| 61 |             | गच्छती      |            |
| 62 |             |             | लिखतः      |
| 63 |             |             | एधमानाः    |
| 64 |             |             | पठन्ति     |

अधः दत्तानां कृदन्तानाम् इतरे वचने लिखत ।

|    |           |            |               |
|----|-----------|------------|---------------|
| 65 | बिभ्यत्   |            |               |
| 66 |           |            | याचमानेषु     |
| 67 |           |            | पठताम्        |
| 68 |           |            | वन्दमानानाम्  |
| 69 | क्रीडतः   |            |               |
| 70 | मोदमानस्य |            |               |
| 71 |           |            | कुर्वत्यः     |
| 72 | कुर्वता   |            |               |
| 73 |           |            | पश्यन्त्यः    |
| 74 |           | लालयन्त्यौ |               |
| 75 | ददत्      |            |               |
| 76 |           |            | रुदतीः        |
| 77 |           |            | नृत्यन्तीनाम् |
| 78 |           |            | कुर्वद्भिः    |
| 79 |           | धावतोः     |               |
| 80 | जयन्      |            |               |
| 81 | कुर्वता   |            |               |
| 82 |           |            | प्रविशद्भ्यः  |
| 83 |           |            | क्रीडद्भिः    |
| 84 |           |            | खादद्भिः      |
| 85 |           |            | पठन्तीषु      |
| 86 | बिभ्यत्   |            |               |
| 87 |           |            | एधमानैः       |

|     |              |                  |               |
|-----|--------------|------------------|---------------|
| 88  |              |                  | भाषमाणेषु     |
| 89  | पश्यन्तीम्   |                  |               |
| 90  | प्रचलत्      |                  |               |
| 91  |              |                  | रुदतीः        |
| 92  | शृण्वन्      |                  |               |
| 93  |              |                  | शृण्वतीभ्यः   |
| 94  |              |                  | रुदत्सु       |
| 95  | बिभ्यत्      |                  |               |
| 96  |              |                  | लिखन्तीभ्यः   |
| 97  |              |                  | भवत्सु        |
| 98  |              | स्पर्धमानाभ्याम् |               |
| 99  |              |                  | अधीयानेषु     |
| 100 |              |                  | शृण्वतः       |
| 101 | गच्छन्त्याम् |                  |               |
| 102 |              |                  | प्रविशद्भ्यः  |
| 103 | धावता        |                  |               |
| 104 |              |                  | क्रीडताम्     |
| 105 |              |                  | भवतः          |
| 106 |              |                  | नृत्यन्तीभ्यः |
| 107 |              | गच्छतोः          |               |
| 108 |              |                  | लिखन्तः       |
| 109 |              |                  | नमताम्        |
| 110 |              |                  | शृण्वतः       |

अधः दत्तानां कृदन्तानाम् इतरे वचने लिखत ।

|     |           |           |             |
|-----|-----------|-----------|-------------|
| 111 |           |           | लिखन्त्यः   |
| 112 |           | धावतोः    |             |
| 113 | जीवन्ती   |           |             |
| 114 | नृत्यन्ती |           |             |
| 115 |           | पठन्त्योः |             |
| 116 |           |           | पठतः        |
| 117 | वन्दमानम् |           |             |
| 118 |           |           | लिखन्त्यः   |
| 119 |           | पतती      |             |
| 120 | रुदन्तम्  |           |             |
| 121 | ददत्      |           |             |
| 122 |           |           | क्रीडन्त्यः |
| 124 | कुर्वतीम् |           |             |
| 125 | हसन्ती    |           |             |

|     |             |           |               |
|-----|-------------|-----------|---------------|
| 126 | पठत्        |           |               |
| 127 | यापयन्      |           |               |
| 128 |             |           | पठितवतीभिः    |
| 129 |             |           | खादन्तः       |
| 130 |             |           | लिखद्भिः      |
| 131 |             | पठन्त्योः |               |
| 132 | नृत्यन्त्यै |           |               |
| 133 | कुर्वत्याः  |           |               |
| 134 | पठन्तम्     |           |               |
| 135 |             | ज्वलती    |               |
| 136 |             |           | नृत्यन्तीभ्यः |
| 137 | पठन्ती      |           |               |

उचितं शतान्तं / शानजन्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत ।

|    |   |  |
|----|---|--|
| 1  | यानं शब्दं कुर्वत् ।  |  |
| 2  | निन्दतः दुर्जनान् जनाः दूरीकुर्वन्ति                          |  |
| 3  | पण्डितान् सेवमानस्य रामस्य समीपं भवान् गच्छतु ।               |  |
| 4  | भिक्षुकः धनं याचते । याचमानं तं कश्चन निन्दितवान् ।           |  |
| 5  | भगिनी गायन्ती पाकं करोति ।                                    |  |
| 6  | प्रकाशमानं नक्षत्रं भूमौ पतितं ।                              |  |
| 7  | रामः सस्यस्य वर्धमानाय जलं सिञ्चति ।                          |  |
| 8  | बालकः जलं पिबन् चित्रं पश्यति ।                               |  |
| 9  | गच्छन्ति यानानि अहं दृष्टवती ।                                |  |
| 10 | पठता अग्रजेन सह अनुजः अपि पठति ।                              |  |
| 11 | पलात्यमानं मित्रं शीघ्रं धावति ।                              |  |
| 12 | देवः त्रायते । त्रायमानस्य देवस्य भक्तः अनुग्रहं प्राप्नोत् । |  |
| 13 | श्लोकं पठन्तं छात्रम् अध्यापकः श्लाघितवान् ।                  |  |
| 14 | इदानीं मम मित्रं गृहम् आगच्छत् अस्ति ।                        |  |
| 15 | गीतं स्मरन्त्या तया सम्यक् गीतम् ।                            |  |
| 16 | दीपिका गानं शुण्वती पुष्पाणि बध्नाति ।                        |  |
| 17 | सम्यक् गायन्त्यै गायेकायै क्षीरं ददामि                        |  |
| 18 | अत्र संस्कृतं पाठयतः शिक्षकस्य नाम किम् ?                     |  |
| 19 | फलानि खादतः वानरान् दृष्ट्वा बालिकाः हसितवत्यः                |  |
| 20 | सर्वदा मां पालयति सुब्रह्मण्ये भक्तिं करोमि ।                 |  |
| 21 | वेगेन प्रवहन्त्योः नद्योः मीनाः सन्ति ।                       |  |
| 22 | भुञ्जानाम् पत्नीं पतिः आहूतवान् ।                             |  |
| 23 | शिशुः रुदन् पितामहीम् आहूतवान् ।                              |  |
| 24 | क्रीडद्भ्यः बालिकाभ्यः पाठः न रोचते ।                         |  |
| 25 | व्याधः धावन्तं मृगम् अनुसृतवान् ।                             |  |
| 26 | सखीं स्मरन्तीम् अनुजां अग्रजः दृष्टवान् ।                     |  |
| 27 | वृद्धान् सेवमानस्य युवकस्य वयमपि साहाय्यं कुर्मः              |  |
| 28 | सुरेशः धावन्तम् मूषकं दृष्टवान् ।                             |  |
| 29 | क्रीडन्त्योः बालिकयोः पुस्तके एते ।                           |  |

उचितं शब्दान्तं / शानजन्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत ।

|    |  |  |
|----|--|--|
| 30 | प्रकाशमानं नक्षत्रं भूमौ पतितम् ।                          |  |
| 31 | लज्जमाना कन्या मौनम् आश्रितवती ।                           |  |
| 32 | तत्र कम्पमानां सुन्दरीं लतां पश्यतु ।                      |  |
| 33 | वन्दमानः भक्तः वरं प्राप्तवान् ।                           |  |
| 34 | पतता शिशुना उच्चैः रुदितम् ।                               |  |
| 35 | बालकः गृहं गच्छन् चित्रं पश्यति ।                          |  |
| 36 | बाधमानात् रोगात् शिशुः क्षीणबलः जातः ।                     |  |
| 37 | लम्बमानं फलं बालकः गृहीतवान् ।                             |  |
| 38 | बाधमानेन कण्टकेन सः वेदनाम् अनुभूतवान् ।                   |  |
| 39 | माता गायन्ती पाकं करोति ।                                  |  |
| 40 | वेगेन प्रवहन्त्यां नद्यां मीनाः सन्ति ।                    |  |
| 41 | लज्जमाना कन्या मौनं आश्रितवती                              |  |
| 42 | दिलीपः हिमालयपर्वतानां सौन्दर्यं पश्यन् गतवान्             |  |
| 43 | मित्रम् प्रविशत् 'हरिः ओम्' इति कथयति ।                    |  |
| 44 | श्रीधरः नृत्यते नर्तकाय पारितोषिकं दत्तवान् ।              |  |
| 45 | आकाशे भासमानः भवति, अतः सूर्यस्य अन्यत् नाम भास्करः        |  |
| 46 | देवं वन्दमानाः ते वरं प्राप्तवन्तः ।                       |  |
| 47 | रत्नसिंहासने विराजमानायै अम्बिकायै नमो नमः ।               |  |
| 48 | भाषमाणेन राजकीयपुरुषेण बहु प्रलपितम् ।                     |  |
| 49 | लिखन्त्या छात्रया मध्ये-मध्ये चिन्तनं कृतम् ।              |  |
| 50 | उपनेत्रम् अधः पतत् खेदं जनयति ।                            |  |
| 51 | कम्पमानात् वृक्षात् पर्णानि पतन्ति ।                       |  |
| 52 | श्लोकं वदन्त्यै महिलायै पुस्तकं ददातु ।                    |  |
| 53 | कार्यं कुर्वाणं पुत्रं दृष्ट्वा माता सन्तुष्टा ।           |  |
| 54 | शिशुः क्षीरं पिबन् हसति ।                                  |  |
| 55 | वन्दमानः सः वरं प्राप्तवान् ।                              |  |
| 56 | सेवमानान्सेवकान् यजमानः श्लाघितवान् ।                      |  |
| 57 | गृहे वर्तमानं छात्रम् अध्यापकः श्लाघितवान्                 |  |
| 58 | उत्साहेन प्रयतमानैः जनैः बहूनि संस्कृतकार्याणि क्रियन्ते । |  |

उचितं शत्रन्तं / शानजन्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत ।

|    |   |  |
|----|---|--|
| 59 | स्पर्धमानेषु छात्रेषु उत्साहः महान् अस्ति । |  |
| 60 | वर्धमानाभ्यः बालिकाभ्यः नियमाः न रोचन्ते ।  |  |
| 61 | लम्बमानं फलं बालकः गृहीतवान् ।              |  |
| 62 | कष्टानि सहमाना सा क्षमया जीवति ।            |  |
| 63 | अध्यापकः लिखन्तम् युवकम् आहूतवान् ।         |  |
| 64 | वर्धमानायां वृष्ट्यां मा क्रीडन्तु ।        |  |
| 65 | खिद्यमानस्य मित्रस्य साहाय्यम् आवश्यकम्     |  |



संस्कृतभारती - सेलम्  
सत्सप्तमी रूपेण लिखतु

|    |   |  |
|----|---|--|
| 1  | यदा वाहनम् आगतं, तदा बालाः धावितवन्तः ।                     |  |
| 2  | बालः पतति । माता भीता ।                                     |  |
| 3  | गोपिकाः स्मरन्त्यः । कृष्णः आगतः एव                         |  |
| 4  | द्रौपदी आह्वयन्ती । श्रीकृष्णः अक्षयवस्त्रम् अनुगृहीतवान् । |  |
| 5  | यदा भक्ताः स्मरन्तः आसन् तदा विष्णुः आगतः ।                 |  |
| 6  | पिता गतः । शिशुः रुदितवान् ।                                |  |
| 7  | गुरुः दृष्टः । सः नमस्कृतवान् ।                             |  |
| 8  | रामः जातः । दशरथः मुदितवान् ।                               |  |
| 9  | यदा अर्चकः पूजयन् आसीत्, तदा वाद्यघोषः श्रुतः ।             |  |
| 10 | नागराजः हसितवान् । नागवेणी दृष्टवती ।                       |  |
| 11 | सर्वे पानकं पिबन्तः । श्रान्तिः निर्गता ।                   |  |
| 12 | विवाहः सम्पन्नः । बान्धवाः निर्गताः ।                       |  |
| 13 | परीक्षाः समाप्ताः । बालाः प्रवासीर्थं गतवन्तः ।             |  |
| 14 | जलं नीयमानम् । घटः पतितः ।                                  |  |
| 15 | भवनानि निर्मियमाणानि । विद्युत्सम्पर्कः प्राप्तः ।          |  |
| 16 | यदा वृष्टिः आगता तदा वस्त्राणि आर्द्राणि ।                  |  |
| 17 | कौसल्या आगता । सीता उत्थितवती ।                             |  |
| 18 | आञ्जनेयः आगतः । सीता सन्तोषम् अन्वभवत् ।                    |  |
| 19 | यदा वाहनम् आगच्छत् आसीत् तदा बालाः धावितवन्तः ।             |  |
| 20 | यदा विद्वान् मृदङ्गम् वादयन् अस्ति तदा गायिका तालं गणयति ।  |  |
| 21 | श्रीरामः वनं गतः । दशरथः प्राणान् त्यक्तवान् ।              |  |
| 22 | यदा देशः सुभिक्षः जातः तदा जनाः सन्तुष्टाः ।                |  |
| 23 | नेता आगतवान् आसीत् । तदा जनाः करताडनं कृतवन्तः ।            |  |
| 24 | यदा भगिन्यः हसन्त्यः आसन् तदा पिता आगतवान् ।                |  |
| 25 | यदा उपाहारः क्रियमाणः आसीत् तदा सेविका पतितवती ।            |  |
| 26 | यदा शिक्षिका पाठयन्ती आसीत्, तदा पर्यवेक्षकः परिशीलितवान् । |  |
| 27 | अनुजः स्पर्धमानः । ललितायाः उत्साहः प्रवृद्धः ।             |  |
| 28 | यदा माता पुत्रं स्मरन्ती आसीत् तदा पुत्रः आगतवान् ।         |  |
| 29 | इन्द्रः याचमानः । कर्णः सन्तुष्टः ।                         |  |
| 30 | यदा शिक्षिका पाठयन्ती आसीत् तदा परिवीक्षकः परिशीलितवान् ।   |  |
| 31 | मधुरं क्रियमाणं । अग्रजः आह्वयति ।                          |  |
| 32 | यदा महिला प्रस्थितवती तदा तस्याः सखी आगता ।                 |  |

सत्सप्तमी रूपेण लिखतु

|    |  |  |
|----|--|--|
| 33 | शिक्षिका पाठितवती । छात्राः विषयान् अवगतवन्तः ।                  |  |
| 34 | यदा पिता पत्निकां पठन् आसीत् तदा माता तस्मै चायं दत्तवती ।       |  |
| 35 | कपाटिका उद्घाटिता । वस्त्राणि पतितानि ।                          |  |
| 36 | यदा अर्चकः पुजयन् आसीत् तदा पुष्पप्रसादः प्राप्तः ।              |  |
| 37 | यदा देशः सुभिक्षः जातः तदा जनाः सन्तुष्टाः ।                     |  |
| 38 | यदा विज्ञापिका प्राप्ता तदा सः धनं दत्तवान् ।                    |  |
| 39 | बालकः रुदितवान् । माता उत्थितवती ।                               |  |
| 40 | रामः गच्छन् । दशरथः अपतत् ।                                      |  |
| 41 | यदा रवीन्द्रः कथयन् आसीत् तदा अहं मम बाल्यं स्मृतवती ।           |  |
| 42 | यदा पत्नी मन्दिरं गता आसीत् तदा पतिः सप्रियं पाकं समापितवान् ।   |  |
| 43 | परिक्षाभवने यदा छात्राः लिखन्तः आसन् तदा परिशीलकः प्रविष्टवान् । |  |
| 44 | दमयन्ती आगच्छन्ती । नलः रूपं परिवर्तितवान् ।                     |  |
| 45 | यदा बालकः वर्धते, तदा माता पितरौ सन्तोषम् अनुभूतवन्तः ।          |  |
| 46 | यदा सः गृहनिर्माणं कुर्वन् आसीत् तदा इष्टिकाः पतिताः ।           |  |
| 47 | यदा गुरुः दृष्टः तदा सः नमस्कृतवान् ।                            |  |
| 48 | प्राचार्या आगता । छात्राः उत्थाय स्थितवन्तः ।                    |  |
| 49 | लक्ष्मणः अनुधावन । मृगः अधावत् ।                                 |  |
| 50 | यदा विदूषकः विनोदकणिकां वदन् आसीत् तदा सर्वे हसितवन्तः ।         |  |
| 51 | यदा भीष्मस्य शङ्खनादः श्रुतः तदा अर्जुनः चिन्ताकुलः जातः ।       |  |
| 52 | यदा शिशुना स्वप्नः दृश्यमानः आसीत् तदा उच्चैः क्रन्दनं श्रुतम् । |  |

संस्कृतभारती - सेलम्  
सन्धिं कुरुत

|    |                 |  |  |  |
|----|-----------------|--|--|--|
| 1  | गतिर्भवति       |  |  |  |
| 2  | धृतराष्ट्र उवाच |  |  |  |
| 3  | बृहत् + छत्रम्  |  |  |  |
| 4  | स्वस्मिन् + एव  |  |  |  |
| 5  | पुरः+गामी       |  |  |  |
| 6  | अधः+गतिः        |  |  |  |
| 7  | षट्+रिपुः       |  |  |  |
| 8  | शिरः+भागः       |  |  |  |
| 9  | निः+कामः        |  |  |  |
| 10 | निः+रवः         |  |  |  |
| 11 | सम्+धि          |  |  |  |
| 12 | उत्+लास         |  |  |  |
| 13 | उत्+हरणम्       |  |  |  |
| 14 | दम्+ड           |  |  |  |
| 15 | गुरुर्देवः      |  |  |  |
| 16 | मोक्षः + अस्ति  |  |  |  |
| 17 | जगत् + हिताय    |  |  |  |
| 18 | सम्+ध्या        |  |  |  |
| 19 | शुभम्+कर        |  |  |  |
| 20 | दुः+उपयोगः      |  |  |  |
| 21 | निः+संकोचः      |  |  |  |
| 22 | निः+रोगः        |  |  |  |
| 23 | धनुः+धरः        |  |  |  |
| 24 | मनः+नयनम्       |  |  |  |
| 25 | मृद्+शकटिकम्    |  |  |  |
| 26 | जगत्+जननी       |  |  |  |
| 27 | उत्+छेदः        |  |  |  |
| 28 | तत्+हितम्       |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|    |                  |  |  |  |
|----|------------------|--|--|--|
| 29 | सुराध्यक्षो धर्म |  |  |  |
| 30 | चित् + आनन्दः    |  |  |  |
| 31 | कः + अपि         |  |  |  |
| 32 | निः+रसः          |  |  |  |
| 33 | सम्+रक्षकः       |  |  |  |
| 34 | तत्+नाम          |  |  |  |
| 35 | उत्+नायकः        |  |  |  |
| 36 | दिक्+गयंदः       |  |  |  |
| 37 | वृहत्+नला        |  |  |  |
| 38 | पुरः+कृतः        |  |  |  |
| 39 | उत्+लेखः         |  |  |  |
| 40 | सम्+चय           |  |  |  |
| 41 | किम्+कर          |  |  |  |
| 42 | समुत्+चयम्       |  |  |  |
| 43 | भावो भूतात्मा    |  |  |  |
| 44 | मृत्युम् + जयः   |  |  |  |
| 45 | उत् + लिखितम्    |  |  |  |
| 46 | सत्+नियमः        |  |  |  |
| 47 | रजः+गुणः         |  |  |  |
| 48 | दुः+आशा          |  |  |  |
| 49 | निः+विघ्नः       |  |  |  |
| 50 | बहिः+कृतः        |  |  |  |
| 51 | रजः+उद्गमः       |  |  |  |
| 52 | वाक्+दानः        |  |  |  |
| 53 | सम्+बन्ध         |  |  |  |
| 54 | विपद्+तिः        |  |  |  |
| 55 | भवत्+डमरु        |  |  |  |
| 56 | सम्+कल्प         |  |  |  |
| 57 | रुदन्नागतः       |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|    |               |  |  |  |
|----|---------------|--|--|--|
| 58 | तस्मिन्नपि    |  |  |  |
| 59 | तं + डमरुम्   |  |  |  |
| 60 | महत् + यशः    |  |  |  |
| 61 | तत्+जन्यः     |  |  |  |
| 62 | तत्+रूपम्     |  |  |  |
| 63 | दिक्+वधू      |  |  |  |
| 64 | वाक्+हरिः     |  |  |  |
| 65 | अम्+कः        |  |  |  |
| 66 | दुः+तरः       |  |  |  |
| 67 | वसुम्+धरा     |  |  |  |
| 68 | सम्+रक्षा     |  |  |  |
| 69 | सम्+क्रांति   |  |  |  |
| 70 | उत्कृष्+तः    |  |  |  |
| 71 | धनञ्जयः       |  |  |  |
| 72 | तत् + डमरुः   |  |  |  |
| 73 | चित् + मयम्   |  |  |  |
| 74 | सत्+आशयः      |  |  |  |
| 75 | निः+पापम्     |  |  |  |
| 76 | षट्+आननः      |  |  |  |
| 77 | षट्+अभिज्ञः   |  |  |  |
| 78 | दुः+गुणः      |  |  |  |
| 79 | मनः+चिकित्सा  |  |  |  |
| 80 | यशः+अर्थीः    |  |  |  |
| 81 | सत्+चरित्रः   |  |  |  |
| 82 | सम्+गति       |  |  |  |
| 83 | उत्+छिनः      |  |  |  |
| 84 | सृष्+तिः      |  |  |  |
| 85 | दुर्योधनस्तदा |  |  |  |
| 86 | एतन्मुरारिः   |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                       |  |  |  |
|-----|-----------------------|--|--|--|
| 87  | वाक् + मयम्           |  |  |  |
| 88  | बृहत् + नगरम्         |  |  |  |
| 89  | कः+चित्               |  |  |  |
| 90  | आविः+भावः             |  |  |  |
| 91  | षट्+गुणः              |  |  |  |
| 92  | उत्+मत्तः             |  |  |  |
| 93  | दुः+कर्मः             |  |  |  |
| 94  | यशः+इच्छा             |  |  |  |
| 95  | उत्+डयनम्             |  |  |  |
| 96  | उत्+श्वासः            |  |  |  |
| 97  | पम्+चमः               |  |  |  |
| 98  | सम्+शयः               |  |  |  |
| 99  | चतुर्व्यूहश्वतुर्दष्ट |  |  |  |
| 100 | कुर्वन् + अस्मि       |  |  |  |
| 101 | परमः + मतः            |  |  |  |
| 102 | हरिः+चन्द्रः          |  |  |  |
| 103 | सम्+स्मरणम्           |  |  |  |
| 104 | वाक्+दत्ता            |  |  |  |
| 105 | षट्+भुजा              |  |  |  |
| 106 | दुः+बलः               |  |  |  |
| 107 | दिक्+भ्रमः            |  |  |  |
| 108 | निः+शुल्कः            |  |  |  |
| 109 | तत्+मयम्              |  |  |  |
| 110 | सम्+घटनम्             |  |  |  |
| 111 | सम्+युक्तः            |  |  |  |
| 112 | सम्+रक्षणम्           |  |  |  |
| 113 | बालो-स्ति             |  |  |  |
| 114 | बृहन्नगरम्            |  |  |  |
| 115 | सञ्जयः + उवाच         |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                |  |  |  |
|-----|----------------|--|--|--|
| 116 | दिक्+गजः       |  |  |  |
| 117 | वाक्+ईशः       |  |  |  |
| 118 | निः+आहारः      |  |  |  |
| 119 | चतुः+पदम्      |  |  |  |
| 120 | निः+रजः        |  |  |  |
| 121 | दुः+चक्रः      |  |  |  |
| 122 | सत्+चितः       |  |  |  |
| 123 | किम्+तु        |  |  |  |
| 124 | सत्+नारी       |  |  |  |
| 125 | सम्+हिता       |  |  |  |
| 126 | तत्+शंकरः      |  |  |  |
| 127 | तदस्माकम्      |  |  |  |
| 128 | षट् + आननः     |  |  |  |
| 129 | मुं + डनम्     |  |  |  |
| 130 | मनः+नीतः       |  |  |  |
| 131 | धनुः+टंकारः    |  |  |  |
| 132 | सत्+उपयोगः     |  |  |  |
| 133 | उत्+आहरणम्     |  |  |  |
| 134 | प्रथमः+अध्यायः |  |  |  |
| 135 | निः+चलः        |  |  |  |
| 136 | उत्+नतः        |  |  |  |
| 137 | उद्+हरणम्      |  |  |  |
| 138 | तीर्थम्+करः    |  |  |  |
| 139 | उत्+लंघन       |  |  |  |
| 140 | उत्+नयनम्      |  |  |  |
| 141 | दंष्ट्रश्चतुर् |  |  |  |
| 142 | नमः + तुभ्यम्  |  |  |  |
| 143 | वनम् + गच्छामि |  |  |  |
| 144 | निः+छलः        |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                  |  |  |  |
|-----|------------------|--|--|--|
| 145 | दिक्+नाथः        |  |  |  |
| 146 | तपः+धनम्         |  |  |  |
| 147 | तुष्+तः          |  |  |  |
| 148 | पुरः+चरणः        |  |  |  |
| 149 | निः+भयः          |  |  |  |
| 150 | निः+तुरः         |  |  |  |
| 151 | सम्+कलन          |  |  |  |
| 152 | मृद्+तिका        |  |  |  |
| 153 | उत्+ज्वलः        |  |  |  |
| 154 | दिक्+नागः        |  |  |  |
| 155 | एवमुक्त्वा       |  |  |  |
| 156 | रामश्छात्रः      |  |  |  |
| 157 | परिषद् + कार्यम् |  |  |  |
| 158 | तत्+जन्यः        |  |  |  |
| 159 | षट्+मासः         |  |  |  |
| 160 | निः+उत्साहः      |  |  |  |
| 161 | मनः+बलः          |  |  |  |
| 162 | मनः+व्यथा        |  |  |  |
| 163 | किम्+चितम्       |  |  |  |
| 164 | शरद्+कालः        |  |  |  |
| 165 | तत्+लीनः         |  |  |  |
| 166 | उत्+शृङ्खला      |  |  |  |
| 167 | सम्+जीवनी        |  |  |  |
| 168 | विपद्+कालः       |  |  |  |
| 169 | तद्धितम्         |  |  |  |
| 170 | सच्छीलम्         |  |  |  |
| 171 | षड् + कोणः       |  |  |  |
| 172 | धनिकः + आगच्छन्  |  |  |  |
| 173 | अच्+अन्तः        |  |  |  |



सन्धिं कुरुत ।

|     |                 |  |  |  |
|-----|-----------------|--|--|--|
| 174 | मनः+अनुभूतिः    |  |  |  |
| 175 | मनः+दशा         |  |  |  |
| 176 | जगत्+आत्मा      |  |  |  |
| 177 | दिक्+अंतः       |  |  |  |
| 178 | अः+चर्यः        |  |  |  |
| 179 | उपनिषद्+कालः    |  |  |  |
| 180 | सम्+सारः        |  |  |  |
| 181 | उत्+मेषः        |  |  |  |
| 182 | उत्+लंघनम्      |  |  |  |
| 183 | हयैर्युक्ते     |  |  |  |
| 184 | अस्मद् + पुत्रः |  |  |  |
| 185 | बालः + हसति     |  |  |  |
| 186 | निः+आशा         |  |  |  |
| 187 | आशीः+वादः       |  |  |  |
| 188 | भगवत्+गीता      |  |  |  |
| 189 | मनः+रंजनम्      |  |  |  |
| 190 | परः+अक्षः       |  |  |  |
| 191 | अतः+एव          |  |  |  |
| 192 | सत्+धर्मः       |  |  |  |
| 193 | किम्+वा         |  |  |  |
| 194 | आपद्+तिः        |  |  |  |
| 195 | तत्+शिवः        |  |  |  |
| 196 | पत्+हतिः        |  |  |  |
| 197 | सञ्जय उवाच      |  |  |  |
| 198 | अस्मत्पुत्रः    |  |  |  |
| 199 | तत् + शुभम्     |  |  |  |
| 200 | सम्+क्षेपः      |  |  |  |
| 201 | निः+प्रभः       |  |  |  |
| 202 | अप्+मयम्        |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                   |  |  |  |
|-----|-------------------|--|--|--|
| 203 | चित्+मयम्         |  |  |  |
| 204 | विपद्+कालः        |  |  |  |
| 205 | वाक्+जड़ता        |  |  |  |
| 206 | आयुः+वेदः         |  |  |  |
| 207 | स्व+छन्दः         |  |  |  |
| 208 | षष्+थः            |  |  |  |
| 209 | पृष्+थः           |  |  |  |
| 210 | पद्+हतिः          |  |  |  |
| 211 | अजन्तः            |  |  |  |
| 212 | पश्यन्नस्मि       |  |  |  |
| 213 | रुदन् + आगतः      |  |  |  |
| 214 | उत् + डयते        |  |  |  |
| 215 | नमः+कारः          |  |  |  |
| 216 | दुः+शासनः         |  |  |  |
| 217 | सत्+गतिः          |  |  |  |
| 218 | आ+छादनम्          |  |  |  |
| 219 | तमः+गुणः          |  |  |  |
| 220 | दुः+सहः           |  |  |  |
| 221 | तद्+हितः          |  |  |  |
| 222 | संसद्+सत्रः       |  |  |  |
| 223 | आकृष्+तः          |  |  |  |
| 224 | दिक्+दर्शनः       |  |  |  |
| 225 | षण्मुखः           |  |  |  |
| 226 | अब्जम्            |  |  |  |
| 227 | सम्यक् + अभिहितम् |  |  |  |
| 228 | सत्+विचारः        |  |  |  |
| 229 | णिच्+अंतः         |  |  |  |
| 230 | षट्+दर्शनम्       |  |  |  |
| 231 | सत्+मानम्         |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                 |  |  |  |
|-----|-----------------|--|--|--|
| 232 | यशः+शरीरम्      |  |  |  |
| 233 | भाः+करः         |  |  |  |
| 234 | स्वयम्+वरम्     |  |  |  |
| 235 | उत्+मुखम्       |  |  |  |
| 236 | अलम्+कार        |  |  |  |
| 237 | सत्+मार्गः      |  |  |  |
| 238 | सम्+भव          |  |  |  |
| 239 | अहङ्करोमि       |  |  |  |
| 240 | रामस् + छात्रः  |  |  |  |
| 241 | अनुवादः + तु    |  |  |  |
| 242 | पयः+ओदनम्       |  |  |  |
| 243 | उत्+हतः         |  |  |  |
| 244 | उरः+जः          |  |  |  |
| 245 | षट्+यन्त्रः     |  |  |  |
| 246 | वयः+वृद्धः      |  |  |  |
| 247 | निः+आधारः       |  |  |  |
| 248 | दुः+प्रकृतिः    |  |  |  |
| 249 | तत्+टीका        |  |  |  |
| 250 | उत्+लासः        |  |  |  |
| 251 | उत्+मूलनम्      |  |  |  |
| 252 | उत्+चारणम्      |  |  |  |
| 253 | लोकाध्यक्षस्सुर |  |  |  |
| 254 | सत् + चित्      |  |  |  |
| 255 | उत् + श्वासः    |  |  |  |
| 256 | षट्+रसः         |  |  |  |
| 257 | दुः+चरित्रः     |  |  |  |
| 258 | दुः+साहसः       |  |  |  |
| 259 | सम्+देशः        |  |  |  |
| 260 | उत्+मादः        |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                 |  |  |  |
|-----|-----------------|--|--|--|
| 261 | सम्+जयः         |  |  |  |
| 262 | नमः+ते          |  |  |  |
| 263 | सम्+चितः        |  |  |  |
| 264 | उत्+लेख         |  |  |  |
| 265 | वि+छेदः         |  |  |  |
| 266 | सम्+गठनम्       |  |  |  |
| 267 | शरच्चन्द्रः     |  |  |  |
| 268 | धनुरुद्धम्य     |  |  |  |
| 269 | धेनुः + अपि     |  |  |  |
| 270 | बुद्धिः + योगे  |  |  |  |
| 271 | सत्+आचारः       |  |  |  |
| 272 | निः+कपटः        |  |  |  |
| 273 | निः+आमिषः       |  |  |  |
| 274 | उद्+तरम्        |  |  |  |
| 275 | षट्+रागः        |  |  |  |
| 276 | प्रादुः+भावः    |  |  |  |
| 277 | सत्+जनः         |  |  |  |
| 278 | श्रीमत्+नारायणः |  |  |  |
| 279 | उत्+चाटनम्      |  |  |  |
| 280 | उत्+चरितम्      |  |  |  |
| 281 | तस्मान्न        |  |  |  |
| 282 | अधः + दत्तम्    |  |  |  |
| 283 | पितुः + आज्ञा   |  |  |  |
| 284 | निः+अर्थकः      |  |  |  |
| 285 | हृक्+अंचलः      |  |  |  |
| 286 | पयः+निधिः       |  |  |  |
| 287 | तपः+बलः         |  |  |  |
| 288 | दुः+गम्         |  |  |  |
| 289 | सरः+जः          |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                 |  |  |  |
|-----|-----------------|--|--|--|
| 290 | तत्+भवः         |  |  |  |
| 291 | उत्+डयनम्       |  |  |  |
| 292 | तद्+परम्        |  |  |  |
| 293 | परि+छेदः        |  |  |  |
| 294 | सत्+शास्त्रम्   |  |  |  |
| 295 | जगद्गुरुः       |  |  |  |
| 296 | अहङ्कारः        |  |  |  |
| 297 | वाक् + शरः      |  |  |  |
| 298 | निः+तेजः        |  |  |  |
| 299 | तिरः+कारः       |  |  |  |
| 300 | निः+सन्देहः     |  |  |  |
| 301 | उत्+गमः         |  |  |  |
| 302 | तद्+क्षणम्      |  |  |  |
| 303 | निः+चिन्तः      |  |  |  |
| 304 | वाक्+ईश्वरी     |  |  |  |
| 305 | सम्+ज्ञा        |  |  |  |
| 306 | उत्+शिष्टः      |  |  |  |
| 307 | अनु+छेदः        |  |  |  |
| 308 | वाक्+जालः       |  |  |  |
| 309 | मरुच्चलति       |  |  |  |
| 310 | स्याडुक्का      |  |  |  |
| 311 | बहवः + इच्छन्ति |  |  |  |
| 312 | कः + वा         |  |  |  |
| 313 | तत्+अनुसार      |  |  |  |
| 314 | यशः+अभिलाषा     |  |  |  |
| 315 | सम्+न्यासी      |  |  |  |
| 316 | परम्+तु         |  |  |  |
| 317 | पयः+दः          |  |  |  |
| 318 | उत्+घाटनम्      |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                  |  |  |  |
|-----|------------------|--|--|--|
| 319 | जगत्+जननी        |  |  |  |
| 320 | वृहत्+माला       |  |  |  |
| 321 | वृहत्+टीका       |  |  |  |
| 322 | सम्+ततिः         |  |  |  |
| 323 | वषट्कारो भूत     |  |  |  |
| 324 | अन्तः + गतम्     |  |  |  |
| 325 | षट् + मतम्       |  |  |  |
| 326 | दुः+करः          |  |  |  |
| 327 | अच्+आदि          |  |  |  |
| 328 | दुः+परिणामः      |  |  |  |
| 329 | तपः+भूमिः        |  |  |  |
| 330 | मनः+अभिरामः      |  |  |  |
| 331 | तपः+चर्या        |  |  |  |
| 332 | दिवम्+गत         |  |  |  |
| 333 | जगत्+छाया        |  |  |  |
| 334 | जगत्+नाथः        |  |  |  |
| 335 | सम्+तोष          |  |  |  |
| 336 | सम्+विधानम्      |  |  |  |
| 337 | नवमो दिनाङ्कः    |  |  |  |
| 338 | तडुमरुः          |  |  |  |
| 339 | एषः+ इच्छति      |  |  |  |
| 340 | सम्+चार          |  |  |  |
| 341 | प्राक्+ऐतिहासिकः |  |  |  |
| 342 | आशीः+वचनम्       |  |  |  |
| 343 | निः+यातः         |  |  |  |
| 344 | सम्+वादः         |  |  |  |
| 345 | सम्+लग्नः        |  |  |  |
| 346 | पुनः+चर्या       |  |  |  |
| 347 | षट्+मुखः         |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                |  |  |  |
|-----|----------------|--|--|--|
| 348 | सम्+दिग्धः     |  |  |  |
| 349 | सम्+तुष्टः     |  |  |  |
| 350 | सत्+मतिः       |  |  |  |
| 351 | कन्याष्ोडश     |  |  |  |
| 352 | पापं कर्तुम्   |  |  |  |
| 353 | कः + वदति      |  |  |  |
| 354 | एषः + गोपालः   |  |  |  |
| 355 | मनः+वेगम्      |  |  |  |
| 356 | मनः+विकारः     |  |  |  |
| 357 | वाक्+निपुणः    |  |  |  |
| 358 | मनः+हर         |  |  |  |
| 359 | मृद्+पात्रम्   |  |  |  |
| 360 | दिक्+अम्बरः    |  |  |  |
| 361 | महत्+ढालः      |  |  |  |
| 362 | शरत्+चन्द्रः   |  |  |  |
| 363 | उत्+ज्वलः      |  |  |  |
| 364 | वृक्ष+छाया     |  |  |  |
| 365 | भूतकृद्भूत     |  |  |  |
| 366 | उत् + डयते     |  |  |  |
| 367 | धनुः + टङ्कारः |  |  |  |
| 368 | सम्+भाषणम्     |  |  |  |
| 369 | जगत्+ईशः       |  |  |  |
| 370 | निः+सन्तान     |  |  |  |
| 371 | मनः+जः         |  |  |  |
| 372 | निः+मलः        |  |  |  |
| 373 | पुनः+आगमनम्    |  |  |  |
| 374 | सम्+निकट       |  |  |  |
| 375 | पत्+हरिः       |  |  |  |
| 376 | तत्+लीन        |  |  |  |

सन्धिं कुरुत ।

|     |                 |  |  |  |
|-----|-----------------|--|--|--|
| 377 | उद्+कोचम्       |  |  |  |
| 378 | भवत्+निष्ठः     |  |  |  |
| 379 | युयुधानो विराटः |  |  |  |
| 380 | रामः + छात्र    |  |  |  |
| 381 | पतद् + हिमम्    |  |  |  |
| 382 | वाक्+व्यापारः   |  |  |  |
| 383 | निः+फलम्        |  |  |  |
| 384 | सम्+घननम्       |  |  |  |
| 385 | षट्+अक्षरः      |  |  |  |
| 386 | मनः+अनुकूलः     |  |  |  |
| 387 | निः+तारः        |  |  |  |
| 388 | निः+बलः         |  |  |  |
| 389 | सम्+शोधनम्      |  |  |  |
| 390 | वाक्+मयम्       |  |  |  |
| 391 | षट्+मूर्तिः     |  |  |  |
| 392 | सम्+पूर्ण       |  |  |  |
| 393 | कम्पः           |  |  |  |
| 394 | वाग्धरति        |  |  |  |
| 395 | बालः +षम्मुखः   |  |  |  |
| 396 | तत् + टीकते     |  |  |  |
| 397 | जगत्+अम्बा      |  |  |  |
| 398 | यशः+दा          |  |  |  |
| 399 | जगत्+माता       |  |  |  |
| 400 | उत्+छादनम्      |  |  |  |
| 401 | हृदयम्+गमः      |  |  |  |
| 402 | मनः+तापः        |  |  |  |
| 403 | उद्+हतः         |  |  |  |
| 404 | सत्+छात्रः      |  |  |  |
| 405 | उद्+हारः        |  |  |  |



सन्धिं कुरुत ।

|     |                  |  |  |  |
|-----|------------------|--|--|--|
| 406 | सम्+योगः         |  |  |  |
| 407 | भूतभृद्भवो       |  |  |  |
| 408 | लसत् + मकुटम्    |  |  |  |
| 409 | सम्यक् + अस्ति   |  |  |  |
| 410 | सम्+हारः         |  |  |  |
| 411 | मनः+अभिलाषा      |  |  |  |
| 412 | पुरः+हितः        |  |  |  |
| 413 | मनः+विज्ञानम्    |  |  |  |
| 414 | बहिः+मुखः        |  |  |  |
| 415 | बहिः+रंगः        |  |  |  |
| 416 | सम्यक्+ज्ञानः    |  |  |  |
| 417 | तरु+छाया         |  |  |  |
| 418 | सम्+करः          |  |  |  |
| 419 | उत्+मोचनम्       |  |  |  |
| 420 | जलत्+डमरु        |  |  |  |
| 421 | प्रथमो-ध्यायः    |  |  |  |
| 422 | मधुलिङ्गस्ति     |  |  |  |
| 423 | छात्रः + तिष्ठति |  |  |  |
| 424 | सत्+जनः          |  |  |  |
| 425 | निः+चयः          |  |  |  |
| 426 | संसद्+सदस्यः     |  |  |  |
| 427 | यशः+गानम्        |  |  |  |
| 428 | ऋक्+वेदः         |  |  |  |
| 429 | अम्+डम्          |  |  |  |
| 430 | चतुः+कोणः        |  |  |  |
| 431 | सत्+चिदानन्दः    |  |  |  |
| 432 | सम्+देहः         |  |  |  |
| 433 | धनम्+जयः         |  |  |  |
| 434 | उत्+हारः         |  |  |  |

संस्कृतभारती - सेलम्

शुद्धम् उत अशुद्धम् इति लिखत ।

|    |   |                    |
|----|---|--------------------|
| 1  | वृत्तेन हि भवत्यार्यो न धनेन न विद्यया ।                              | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 2  | अर्जुनः परया दयया आविष्टः   | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 3  | मूकः इति कश्चन देवः आसीत् ।   | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 4  | वर्धमानः व्याधिः शत्रुः च न उपेक्षणीयौ ।                              | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 5  | अर्जुनस्य रथस्य अश्वानां वर्णः कृष्णः ।                               | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 6  | इन्द्रियाणां प्रवर्तनस्य कारणं शरीरम् एव ।                            | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 7  | यथार्थतया विनीतः नरः लोके सुलभतया दृश्यते ।                           | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 8  | पाणिनेः जन्मस्थलं लाहोरः  | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 9  | श्रीकृष्णः एव सर्वोत्तमः पूजार्हः इति भीमः अकथयत् ।                   | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 10 | जीवनं जलतरङ्गाः इव तात्कालिकम् ।                                      | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 11 | 'ट्' मृदु-व्यञ्जनं भवति ।   | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 12 | उत् अतिष्ठत् - उततिष्ठत् ।  | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 13 | शत्रुनाशनेन परपीडनं भवति । परपीडनं पापस्य कारणम् ।                    | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 14 | श्रीकृष्णः पौण्ड्रं शङ्खं दध्मौ ।                                     | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 15 | यादवाः अन्ताक्षरीक्रीडया प्रयाणकालं यापितवन्तः                        | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 16 | कपिध्वजः इति अर्जुनस्य अपरं नाम                                       | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 17 | माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।  | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 18 | एककल्पे चत्वारः मन्वन्तराः भवन्ति ।                                   | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 19 | दानं त्यागः नाशः इति वित्तस्य तिस्रः गतयः भवन्ति ।                    | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 20 | यः स्वशक्तिं न प्रकटीकरोति तं जनाः तिरस्कुर्वन्ति                     | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 21 | मानसरोवरः भारतदेशे अस्ति  | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 22 | कणादः अणुसिद्धान्तं प्रतिपादितवान् ।                                  | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 23 | उपमा कालिदासस्य, भारवेः पदलालित्यम् ।                                 | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 24 | भीष्मे शङ्खं निनादयति सति दुर्योधनः आनन्दम् अनुभूतवान् ।              | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 25 | यः प्रीणयेत् पितरं सुचरितैः स पुत्रः ।                                | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 26 | अधिवक्ता विरोधिनां तस्य एव वादेन पराजितवान् । एषः उष्ट्र-लगुडन्यायः । | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 27 | भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।                                 | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 28 | सतां सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणम् अन्यजनपरामर्शः ।                    | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 29 | शिवः नागास्त्रं अर्जुनाय दत्तवान्                                     | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 30 | पुरुषकारः दैवम् च एतद्द्वयं मानवरूप-रथस्य चक्रद्वयम् ।                | शुद्धम् / अशुद्धम् |
| 31 | शिशुपालस्य पञ्चाशत् अपराधान् मृष्यामि ।                               | शुद्धम् / अशुद्धम् |

संस्कृतभारती - सेलम्

उचितम् उत्तरं चिनुत

|    |   |   |
|----|---|---|
| 32 | "सेव्-सेवते" - अस्य शानच्-पुंलिङ्ग-रूपम् _____ ।      | (सेवयमानः /सेव्यते /सेवमानः)                      |
| 33 | "पिबति" अस्य कर्मणि रूपम् - _____                     | (पिब्यति/पीयते/ पास्यति) ।                        |
| 34 | रुदिर् (रोदिति) + तव्यत् =                            | रुदितव्यम्, रोदितव्यम्, रुद्व्यम्                 |
| 35 | "पाल्?" धातोः लट्-लकाररूपं _____ ।                    | (पालति /पालयति/ पाल्यते)                          |
| 36 | "परिषत्कार्यम्" अत्र _____ सन्धिः ।                   | (श्रुत्व सन्धिः/ जश्त्व सन्धिः/ चर्त्वसन्धिः)     |
| 37 | "शृणोति" - अस्य कर्मणि रूपम् _____ ।                  | (श्रूयते /श्रूयमाणम्/ श्रूणूयते)                  |
| 38 | "कुरुते" - अस्य शानच्-पुंलिङ्ग-रूपम् _____ ।          | (कुरुमानः/ कुर्वाणः /क्रियमाणः)                   |
| 39 | "चिद्विम्बा" अत्र _____ सन्धिः ।                      | (जश्त्वसन्धिः / चर्त्वसन्धिः/ छत्वसन्धिः)         |
| 40 | "कञ्चित्" इत्यत्र _____ भवति ।                        | (परसवर्णसन्धिः/ अनुनासिकसन्धिः/ अनुस्वारसन्धिः)   |
| 41 | "नयति" - अस्य कर्तरि लृट्/ भविष्यत्कालरूपम्- _____    | (नेष्यति/ नास्यति / नश्यति)                       |
| 42 | वि + लप् (विलपति) + ल्यप् =                           | विलप्य, विलपित्वा, विलाप्य                        |
| 43 | "तत् + हरति" - सन्धिः कः ? _____                      | (ङमडागमसन्धिः / ष्टुत्वसन्धिः / पूर्वसवर्णसन्धिः) |
| 44 | "रोदिति" - अस्य क्त प्रत्ययः _____                    | (रोदितः / रुद्यते / रुदितः)                       |
| 45 | "को भवान्?" इत्यत्र विसर्गस्य _____ भवति ।            | (लोफः / उत्वं/ सत्वम्)                            |
| 46 | "गच्छन्ती" -अस्य चतुर्थी विभक्तिरूपम् _____ ।         | (गच्छन्तीनाम्/गच्छन्त्याः/ गच्छन्त्यै)            |
| 47 | "उत् + लिखितम्"-सन्धिः _____                          | (सनर्णदीर्घ सन्धिः/ पूर्वसवर्णसन्धिः/ परसवर्ण स.) |
| 48 | भू (भवति) + तुमुन्                                    | भूतुम्, भवितुम्, भावितुम्                         |
| 49 | " भवान्" अस्य षष्ठी विभक्तिरूपम् _____ ।              | (भवत्सु / भवतः/ भवन्तौ)                           |
| 50 | "गणयति" इत्यत्र कर्मणि रूपं _____                     | (गणयते / गण्यते/ गणयति) ।                         |
| 51 | "ददत्" - अस्य पुंलिङ्गे प्रथमा-विभक्तिरूपम् _____ ।   | (ददन्/ ददती/ ददत्)                                |
| 52 | कर्म - पदस्य प्रथमा- वाचक - पदानि                     | कम्, काम्, किं / कः, का, किं / कस्य कयोः केषां    |
| 53 | "शेते" - अस्य शानच्-पुंलिङ्ग-रूपम् _____ ।            | (शयमानः/शेयमानः/शयानः)                            |
| 54 | "बुद्धिर्योगे" अत्र सन्धिः _____ ।                    | (श्रुत्वसन्धिः / विसर्ग लोपः /विसर्ग रेफः)        |
| 57 | "मनश्चञ्चलम्" अत्र _____ सन्धिः                       | (श्रुत्वसन्धिः/विसर्ग-लोपः / विसर्ग रेफः) ।       |
| 58 | क्तप्रत्ययः _____                                     | भविष्यत् / वर्तमान / भूत                          |
| 59 | "कुर्वन्" - अस्य चतुर्थीविभक्तिरूपं _____ ।           | (कुर्वते/ कुर्वन्भिः / कुर्वति)                   |
| 60 | "दा-ददाति" एतस्य पुंलिङ्ग-शतृप्रत्ययान्तं _____ रूपम् | (ददत्/ ददन्/ ददान्) ।                             |
| 61 | "शेते" अस्य शानच्-स्त्रीलिङ्ग-रूपम् _____             | (शयमाना/शेयमाना /शयाना) ।                         |
| 62 | रामोऽपि   | रामः + अपि / रामा अपि / राम + अपि                 |
| 63 | "पिबति" - अस्य क्त प्रयोगः _____ ।                    | (पीतम् /पिबितम् / पातम्)                          |
| 64 | "स तया" - सन्धिः कः ? _____                           | (विसर्ग-लोपः/ श्रुत्वसन्धि/सन्धिः नास्ति) ।       |

संस्कृतभारती - सेलम्

मेलयत - I

|    |                          |                         |  |
|----|--------------------------|-------------------------|--|
| 1) | मनस्वी कार्यार्थी        | तत्कलत्रम्              |  |
| 2) | स्थिरम् इन्द्रिय-धारणम्  | वज्रादपि अखण्डितम्      |  |
| 3) | यद्गुरुरेव--- हितमिच्छति | न गणयति दुःखं न च सुखम् |  |
| 4) | धीराणां चित्तरत्नम्      | तां योगमिति मन्यन्ते    |  |

मेलयत - II

|    |          |          |  |
|----|----------|----------|--|
| 1) | भोगे     | जराभयम्  |  |
| 2) | बले      | खलभयम्   |  |
| 3) | गुणे     | रोगभयम्  |  |
| 4) | शास्त्रे | रिपुभयम् |  |
| 5) | रूपे     | वादिभयम् |  |

मेलयत - III

|    |          |           |  |
|----|----------|-----------|--|
| 1) | अणिमा    | मोक्षपुरी |  |
| 2) | भयानकः   | चिरञ्जीवी |  |
| 3) | धैवतम्   | सिद्धिः   |  |
| 4) | विभीषणः  | रसः       |  |
| 5) | अवन्तिका | स्वरः     |  |

मेलयत - IV

|    |        |                 |  |
|----|--------|-----------------|--|
| 1) | करे    | गुरुपादप्रणयिता |  |
| 2) | शिरसि  | श्लाघ्यः त्यागः |  |
| 3) | हृदये  | सत्या वाणी      |  |
| 4) | भुजयोः | स्वच्छा वृत्तिः |  |
| 5) | मुखे   | अतुलं वीर्यम्   |  |

मेलयत - V

|    |                       |                        |  |
|----|-----------------------|------------------------|--|
| 1) | धर्मं जिज्ञासमानानां  | वज्रादपि अखण्डितम्     |  |
| 2) | अव्यवस्थितचित्तस्य    | प्रवर्तने मनो हि हेतुः |  |
| 3) | धीराणां चित्तरत्नं    | भवत्यार्यः             |  |
| 4) | सर्वेषां इन्द्रियाणां | प्रमाणं परमं श्रुतिः   |  |
| 5) | वृत्तेन हि            | प्रसादोऽपि भयङ्करः     |  |

मेलयत - VI

|    |              |             |  |
|----|--------------|-------------|--|
| 1) | जाह्नवीतोयम् | पदलालित्यम् |  |
| 2) | भारवेः       | दीपशिखा     |  |
| 3) | दण्डी        | औषधम्       |  |
| 4) | जम्बूद्वीपः  | अर्थगौरवम्  |  |
| 5) | कालिदासः     | भारतवर्षम्  |  |

मेलयत - VII

|    |             |              |  |
|----|-------------|--------------|--|
| 1) | विष्णुपत्नि | किरीटः       |  |
| 2) | करदर्शनम्   | जाह्नवीतोयम् |  |
| 3) | सरस्वती     | प्रभाते      |  |
| 4) | हिमलयः      | भूमिः        |  |
| 5) | औषधम्       | नदी          |  |

मेलयत - VIII

|    |        |            |  |
|----|--------|------------|--|
| 1) | तया    | लिखन्तीः   |  |
| 2) | फलानि  | पठनीयः     |  |
| 3) | श्लोकः | कृतम्      |  |
| 4) | माता   | लम्बमानानि |  |

मेलयत - IX

|    |          |          |  |
|----|----------|----------|--|
| 1) | पठन्     | पुरुषस्य |  |
| 2) | रुदन्तम् | बालकाय   |  |
| 3) | धावते    | शिशुम्   |  |
| 4) | गच्छतः   | छात्रः   |  |
| 5) | नृत्यतः  | वाहनात्  |  |

मेलयत - X

|    |           |             |  |
|----|-----------|-------------|--|
| 1) | वीरः      | नारायणः     |  |
| 2) | करदर्शनम् | मोक्षदायिका |  |
| 3) | मथुरा     | रसः         |  |
| 4) | वैद्यः    | पदलालित्यम् |  |
| 5) | दण्डिनः   | प्रभाते     |  |

संस्कृतभारती - सेलम्

अनर्ह पदम् चित्वा लिखतु

|    |   |  |
|----|---|--|
| 1  | गुरुर्देवः, विद्यालयः, रमेशः, गङ्गाधरः      |  |
| 2  | गतवान्, गच्छन्, रुदन्, पठन्                 |  |
| 3  | जगन्नाथः, तन्मयः, वागीशः, वाङ्मयम्          |  |
| 4  | पार्थः, कौन्तेयः, पाण्डवः, माधवः            |  |
| 5  | पश्यन्ती, श्रृण्वती, वदन्ती, नमन्ति         |  |
| 6  | तदपि, तदेव तदापि तदुपरि                     |  |
| 7  | तस्मिन्नेव, कस्मिन्नपि कुर्वन्निव तन्नाम    |  |
| 8  | डयते पठ्यते लायते मन्यते                    |  |
| 9  | वागीशः, वाङ्मयम् वाग्देवी वाक्चातुर्यम्     |  |
| 10 | मत्स्यः, कूर्मः वराहः गरुडः                 |  |
| 11 | दिवोदेशः, सुश्रुतः पिङ्गलः जीवकः            |  |
| 12 | कृत्तिवासः, अध्यात्मम् गुणशीला पम्पा        |  |
| 13 | गौरीशङ्करम् उज्जयिनी पशुपतीश्वरः मानससरोवरः |  |
| 14 | लिखितम् लिखन्तम् लिखते लिखतः                |  |
| 15 | पठन् पठन्ती पठन्तौ पठन्तः                   |  |
| 16 | भीमः अश्वत्थामा द्रुपदः अभिमन्युः           |  |
| 17 | अत्र सर्वत्र अन्यत्र वक्त्र                 |  |
| 18 | श्रीकृष्णः इन्द्रः व्यासः किरातः            |  |
| 19 | कृत्वा कर्तुम् करोति कर्तव्यम्              |  |
| 21 | पादः केशः शिरः हस्तः                        |  |
| 22 | पठन् लिखन् वदन् नामन्                       |  |
| 23 | अणिमा महिमा सुषमा लघिमा                     |  |
| 24 | प्रागेव तदेव बालेव कुर्यादिव                |  |
| 26 | गङ्गा यमुना सरस्वती कपिला                   |  |
| 27 | अयोध्या मथुरा काशी रामेश्वरम्               |  |
| 28 | अर्जुनः कौन्तेयः हृषीकेशः गुडाकेशः          |  |
| 29 | सीता अहल्या मन्दोदरी गान्धारी               |  |
| 30 | अजः, दशरथः, सात्यकिः रामः                   |  |
| 31 | पाण्डवाश्च वाग्देवी हरिश्शेते लक्ष्मनश्च    |  |
| 32 | दयिता पत्नी कलत्रम् भार्या                  |  |
| 33 | लाभ चिन्त सेव रथ                            |  |

| अनर्ह पदम् चित्वा लिखतु |  |  |
|-------------------------|--|--|
| 34                      | एवं , विहाय , इति , रामाय                    |  |
| 35                      | क्रीडन् , क्रीडामि , क्रीडित्वा , क्रीदितुम् |  |
| 36                      | भानुः , गुरुः , वायुः, बुधः                  |  |
| 37                      | राघवः , रामः , माधवः , दाशरथिः               |  |
| 38                      | कटुः , उष्णम् , लवणम् , मधुरम्               |  |
| 39                      | नमः , गणः , शिरः , मनः                       |  |
| 40                      | अणिमा , गरिमा, पूर्णिमा , महिमा              |  |
| 41                      | निषादः , गान्धाराः , मध्यमः , सप्तमः         |  |
| 42                      | दीपमूलं , दीपाग्रं , दीपमध्यम् , दीपच्छाया   |  |
| 43                      | मनसि , यशसि , भवसि , वयसि                    |  |
| 44                      | शृङ्गारः , वीरः , मधुरः , करुणः              |  |
| 45                      | कटुः , शृङ्गारः , लवणः , मधुरः               |  |
| 46                      | गङ्गा , सरस्वती , कपिला , यमुना              |  |

| एतानि पदानि उपयुज्य वाक्यानि रचयत |              |  |
|-----------------------------------|--------------|--|
| 1                                 | कृत्वा       |  |
| 2                                 | गत्वा        |  |
| 3                                 | त्यक्त्वा    |  |
| 4                                 | प्रतिगृह्य   |  |
| 5                                 | आकर्ण्य      |  |
| 6                                 | आगत्य        |  |
| 7                                 | प्राप्य      |  |
| 8                                 | गन्तुं       |  |
| 9                                 | प्रवेष्टुं   |  |
| 10                                | पठितुं       |  |
| 11                                | लेखनीया      |  |
| 12                                | ऋहितव्यं     |  |
| 13                                | प्रत्यक्षः   |  |
| 14                                | बालकाय       |  |
| 15                                | लभते         |  |
| 16                                | शोभमानानि    |  |
| 17                                | भाषमाणाः     |  |
| 18                                | भुञ्जानाः    |  |
| 19                                | अधीयानाः     |  |
| 20                                | कम्पमानः     |  |
| 21                                | वन्दमानम्    |  |
| 22                                | कामयमानाय    |  |
| 23                                | स्पन्दमानात् |  |
| 24                                | प्रयतमानानां |  |
| 25                                | बिभ्यत्      |  |
| 26                                | क्रीडन्      |  |
| 27                                | कुर्वन्      |  |
| 28                                | क्रीणन्      |  |
| 29                                | निन्दतः      |  |

|    |                |  |
|----|----------------|--|
| 30 | पश्यन्तः       |  |
| 31 | अपहरन्तं       |  |
| 32 | गच्छन्तं       |  |
| 33 | लिखन्तं        |  |
| 34 | गायन्तं        |  |
| 35 | जिघ्रता        |  |
| 36 | पठता           |  |
| 37 | कूजद्भिः       |  |
| 38 | व्याप्नुवद्भिः |  |
| 39 | धावते          |  |
| 40 | आगते           |  |
| 41 | कुर्वद्भ्यः    |  |
| 42 | आगच्छत्सु      |  |
| 43 | पठत्सु         |  |
| 44 | अटितवती        |  |
| 45 | नृत्यन्ती      |  |
| 46 | क्षालयन्त्यः   |  |
| 47 | खादन्त्यः      |  |
| 48 | धावन्तीः       |  |
| 49 | नृत्यन्त्यै    |  |
| 50 | स्फुरन्त्याः   |  |
| 51 | वहन्त्याः      |  |
| 52 | जल्पन्त्यां    |  |
| 53 | आगतायां        |  |
| 54 | वहन्त्यां      |  |
| 55 | आगन्तीषु       |  |
|    |                |  |



**प्रश्नस्य उत्तरं ददातु**

|    |   |  |
|----|---|--|
| 1  | श्रीकृष्णः किं कर्तुं निश्चितवान्?            |  |
| 2  | धर्मं जिज्ञासमानानां परमं प्रमाणम् किम्?      |  |
| 3  | विवेकिनः कस्मात् मोक्षमिच्छन्ति?              |  |
| 4  | स्त्रीणाम् उपदेशवचनेषु के अनादरं प्रकटयन्ति । |  |
| 5  | श्रीकृष्णेन सह के प्रस्थिताः ?                |  |
| 6  | भीष्मः कं पूजार्हम् अवदत् ?                   |  |
| 7  | महादेवः किमर्थं कुपीतः ?                      |  |
| 8  | शान्तिः केषां स्वभानः ? केषां स्वभावः न ?     |  |
| 9  | अर्जुनः कुलं अवसत् ?                          |  |
| 10 | शिशुपालस्य दूतः कृष्णं किम् उपदिदेश ?         |  |
| 11 | श्रीकृष्णं द्रष्टुं कः आगतवान् ?              |  |
| 12 | शिवः किमर्थं सन्तुष्टः अभवत् ?                |  |
| 13 | पुरुषाः प्रायेण कुलं अनादरं प्रकटयन्ति ?      |  |
| 14 | शिवः किम् अस्त्रम् अर्जुनाय दत्तवान् ?        |  |
| 15 | कः सन्धिं त्यजति ?                            |  |
| 16 | के पूर्वं पाण्डवानां पौरुषं अभिनन्दन्ति ?     |  |
| 17 | कस्य आगमनेन केषां जन्म सफलम् ?                |  |
| 18 | कुलं केषां विशेषप्रीतिः भवति ?                |  |
| 19 | महादेवः किमर्थं कुपितः ?                      |  |
| 20 | यागस्य अन्ते कः विधिः अस्ति ?                 |  |
| 21 | नारदः कस्य सन्देशं गृहीत्वा आगतवान् ?         |  |
| 22 | रावणः पूर्वजन्मनि कः आसीत् ?                  |  |
| 23 | शिशुपालः किं न असहत् ?                        |  |
|    |   |  |

**प्रश्नस्य उत्तरं ददातु**

|    |   |  |
|----|---|--|
| 24 | श्रीकृष्णः किमिति प्रतिज्ञावचनं दत्तवान् आसीत् ?                |  |
| 25 | शिशुपालस्य वधात् किं भविष्यति ?                                 |  |
| 26 | श्रीकृष्णः कस्य वचनेन सन्तुष्टः जातः ? किं कर्तुं निश्चितवान् ? |  |
| 27 | रत्नानां राशिः कुत्र अस्ति ?                                    |  |
| 28 | इन्द्रः केन आराधनीयः ? ततः किं भवति ?                           |  |
| 29 | इन्द्रः किमर्थं मुनिवेषं धृतवान् ?                              |  |
| 30 | दुर्योधनः मित्राणि कथं पश्यति ?                                 |  |
| 31 | कस्य दौर्जन्यम् असहानीयम् ?                                     |  |
| 32 | इन्द्रः अप्सरसः किम् उक्तवान् ?                                 |  |
| 33 | युधिष्ठिरः किमर्थं महान्तम् आनन्दम् अनुभूतवान् ?                |  |
| 34 | शिशुपालदृष्ट्या कृष्णः कीदृशः ?                                 |  |
| 35 | द्वारकानगरं कुत्र अस्ति ?                                       |  |
| 36 | देवेन्द्रः किं सूचितवान् ?                                      |  |
| 37 | श्रीकृष्णः केन सन्तुष्टः जातः ?                                 |  |
| 38 | युधिष्ठिरः कं किमर्थं हस्तिनापुरं प्रति प्रेषितवान् ?           |  |
| 39 | युधिष्ठिरः किं कर्तुं सङ्कल्पितवान् आसीत् ?                     |  |
| 40 | अप्सरसां चेष्टाः किमर्थं विफलाः जाताः ?                         |  |
| 41 | अर्जुनः किमर्थम् इन्द्रम् आराधयितुम् इच्छति ?                   |  |
| 42 | वनचराणां कष्टं किमर्थं जातम् ?                                  |  |
| 43 | इन्द्रः केन आराधनीयः ? ततः किं भवति ?                           |  |

| प्रश्नस्य उत्तरं ददातु |  |  |
|------------------------|--|--|
| 44                     | मन्त्रालोचनार्थं कौ आगतौ ?                       |  |
| 45                     | कौ न उपेक्षणीयौ ?                                |  |
| 46                     | धर्मराजस्य भीतिः का ?                            |  |
| 47                     | कृष्णेन सह के प्रस्थिताः ?                       |  |
| 48                     | दुष्टाः कदा सुखम् अनुभवन्ति ? कदा च विनश्यन्ति ? |  |
| 49                     | इन्द्रप्रस्थस्य बहिर्भागे कौ परिवारौ मिलितौ ?    |  |
| 50                     | मुनयः किमर्थं शिवसमीपम् अगच्छन् ?                |  |
| 51                     | कस्य अपहरणं न कर्तव्यम् इति वनेचरः उक्तवान् ?    |  |
| 52                     | शिवः युद्धार्थं कं कं प्रेषितवान् ?              |  |
| 53                     | इन्द्रकीलपर्वतः किमर्थं पवितः ?                  |  |
| 54                     | कुल युद्धावकाशः भविष्यति इति उद्भवः उक्तवान् ।   |  |
| 55                     | बलरामः श्रीकृष्णं किम् उक्तवान् ?                |  |
| 56                     | अर्जुनस्य तपसः प्रभावेन किम् अभवत् ?             |  |

संस्कृते अनुवादं कुरुत

|    |   |
|----|---|
| 1  | When the monkeys watched, Hanuman crossed the ocean.                |
|    |   |
| 2  | When Sabhari was meditating, Sri Rama appeared before her.          |
|    |   |
| 3  | As Sita was thinking, Ramaduta Hanuman came.                        |
|    |   |
| 4  | When the teacher came students fell silent.                         |
|    |   |
| 5  | When the Sun set, we returned home.                                 |
|    |   |
| 6  | Why did all of you keep quite when we all come?                     |
|    |   |
| 7  | The student listen to music while writing the article.              |
|    |   |
| 8  | People have cried seeing Rama.                                      |
|    |   |
| 9  | Giving the answer, the teacher went out of the class.               |
|    |   |
| 10 | The travelers travelling the forest ran away afraid of the thieves. |
|    |   |
| 11 | Who is he? Seeing us only.  |
|    |   |
| 12 | Boys who were playing are running here and there.                   |
|    |   |
| 13 | Girls who are playing are running hither and thither.               |
|    |   |
| 14 | The mother remembered the father while giving sweets to everyone.   |
|    |   |
| 15 | Women who were gazing at the shop, stood there itself.              |
|    |   |
| 16 | The women stood watching the shop.                                  |

संस्कृते अनुवादं कुरुत

|    |   |
|----|---|
| 17 | The lady workers doing the work wanted more money.              |
|    |   |
| 18 | The ladies standing there like music.                           |
|    |   |
| 19 | Shalini who is beginning her work prayed to God.                |
|    |   |
| 20 | Mother called the boy who is watching television.               |
|    |   |
| 21 | The teacher saw the boys playing.                               |
|    |   |
| 22 | The teacher gave one book each to the students who are reading. |
|    |   |
| 23 | Give the gift to the girl who is dancing.                       |
|    |   |
| 24 | Flower is blossoming in the garden.                             |
|    |   |
| 25 | The fruit is falling from the tree.                             |
|    |   |
| 26 | Trembling Sita went with Ravana.                                |
|    |   |
| 27 | Monkeys jump from the shaking trees.                            |
|    |   |
| 28 | The boy took the fruit that was dangling.                       |
|    |   |
| 29 | Generally every one gets angry with the beggars that beg.       |
|    |   |
| 30 | Rains follow the summer season.                                 |
|    |   |
| 31 | I work in government hospital.                                  |
|    |   |
| 32 | There are trees around the lake.                                |
|    |   |

| संस्कृते अनुवादं कुरुत |  |
|------------------------|--|
| 33                     | Rabbit gets killed by the lion.  |
|                        |  |
| 34                     | Order of elders should always be followed.                               |
|                        |  |
| 35                     | My relatives had arrived on Tuesday itself.                              |
|                        |  |
| 36                     | Tomorrow there will be examination. I should read.                       |
|                        |  |
| 37                     | What we donate should exceed what we receive.                            |
|                        |  |
| 38                     | In life, what we donate should exceed what we receive.                   |
|                        |  |
| 39                     | The wicked find immense joy in criticizing others.                       |
|                        |  |
| 40                     | The wicked were satisfied by criticizing others.                         |
|                        |  |
| 41                     | Everything is achieved by him who goes along the right way.              |
|                        |  |
| 42                     | Everything is achieved by you going along the right way.                 |
|                        |  |
| 43                     | He whose wisdom flashes in times of adversity is indeed brave.           |
|                        |  |
| 44                     | Mind is the cause of all the activities of the sense organs.             |
|                        |  |
| 45                     | Wise men say that truth and straight forwardness is the greatest Dharma. |
|                        |  |
| 46                     | Arjuna said, "Achyuta, stop my chariot in between the two armies".       |
|                        |  |
| 47                     | Arjuna saw his relatives assembled at Kurukshetra.                       |
|                        |  |

1. काकतालीयन्यायः

यदा कदाचिद् घटना अनपेक्षितरीत्या घटते तदा तस्याः सूचनार्थम् अस्य न्यायस्य प्रयोगः क्रियते । काकः उपविष्टः तालपत्रं च पतितम् इति एकस्मिन् काले अनपेक्षितरीत्या जातं चेत् तयोः कारण – कार्यं सम्बन्धः न भवति । अतः एषः न्यायः काकतालीयन्यायः इत्युच्यते ।

2. भिक्षुपादप्रसारन्यायः

एकदा एकः भिक्षुकः एकस्य सम्पन्नस्य गृहम् आगतः । अयं सम्पन्नः मह्यं पर्याप्तम् अन्नं , वस्त्रं वासस्थलं च ददातु इति तस्य अपेक्षा आसीत् । परन्तु एताः सर्वं सहसा प्राप्तुं शक्यं एव न । अतः भिक्षुकः योजनां कृतवान् यत् आदौ पादप्रसारणस्य कृते आवश्यकं स्थलं प्राप्स्यामि तदनन्तरं शनैः सर्वं संपादयिष्यामि इति ।

एवं महत् फलं अपि प्रेषुना मनुष्येण आदौ अल्पफलेन अपि सन्तोष्यम् । कालान्तरेण महत् फलं अपि सम्पाद्यते इति भावः ।

3. देहलीदीपन्यायः

देहल्यां स्थापितः दीपः उभयोः पार्श्वयोः अपि प्रकाशकारणं भवति । एवं केसुचित् वाक्येषु एक एव धर्मः एका क्रिया वा संपूर्ण वाक्यं प्रकाशयति । तादृश समये अयं न्यायः भवति ।

4. सूचीकटाहन्यायः

एकदा एकः पुरुषः कश्चन लोहकारस्य समीपं गत्वा मह्यं कटाहं कृत्वा ददातु - इति उक्तवान् । किञ्चित्कालान्तरे अन्यः कश्चन पुरुषः आगत्य मह्यं एकां सूचीं कृत्वा ददातु - इति उक्तवान् । तदा सः लोहकारः सूचिनिर्माणकार्यं आरब्धं कृतवान् । यतः सूचिनिर्माणाय अधिकसमयः न भवति इति सः ज्ञातवान् ।

तथैव अनेकशब्दयुक्तस्य वाक्यस्य विवरणं विलम्बेन क्रियते सरलशब्दयुक्तस्य आदौ क्रियते ।

5. अन्धपङ्क्त्यन्यायः

एकदा एकः अन्धः एकः पङ्क्तुश्च एकत्र वसति स्म । एकदा द्वाभ्यामपि एकत्र गन्तव्यमासीत् । द्वावपि स्वयं कुत्रापि गन्तुम् असमर्थौ । तौ एकम् उपायं चिन्तितवन्तौ । अन्धः सम्यक् चलितुं शक्तः पङ्क्तुः सम्यक् द्रष्टुं शक्तः । अतः अन्धस्य पृष्ठं पङ्क्तुः आरूढवान् अन्धः गच्छति स्म पङ्क्तुः तस्मै मार्गं कथयति स्म पङ्क्तुः एवं द्वावपि स्वकीयं सामर्थ्यम् उपयुज्य अभीष्टं स्थानं प्राप्तवन्तौ । एवं बुद्धिमन्तः जनाः परस्परसाहाय्येन लक्ष्यं साधयन्ति इति अस्य न्यायस्य अर्थः ।

### 6. वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः

काचन बुद्धिमती वृद्धा आसीत् । सा इन्द्रं उद्दिश्य तपं कृतवती । देवेन्द्रः प्रसन्नः जातः । वरं ददामि पृच्छ इति उक्तवान् । सा एकेन वाक्येन वरं पृष्ठवती । मम पुत्राः सुवर्णस्थालिकायां प्रभूतं घृतं , दधि , क्षीरम् इत्यादि भोजनं कुर्वन्तः सन्ति इति अहं द्रष्टुम् इच्छामि । देवेन्द्रः 'तथास्तु' इति उक्त्वा वरमपि दत्तवान् । तस्याः इदं वाक्यं वृद्धकुमारीवाक्यम् इति प्रसिद्धमस्ति । अनेन एकेन वाक्येन तस्या बहूनि आग्रहानि फलितानि । एकेनैव वाक्येन सा किं किं साधितवती इति वयं पश्यामः ।

सुवर्णस्थालिकायां पुत्रस्य भोजनं कारयितुं प्रभूतं धनम् आवश्यकम् । अतः सा धनिका अभवत् । पुत्रं जनयितुं विवाहं करणीयम् । विवाहार्थं वृद्धा कुमारी भवितव्या । एकं प्रकारेण सा युवत्वम् , विवाहम् , सन्तानम् , संपत्तिं च एकेनैव वरेण प्राप्तवती ।

लघुवाक्येन वा लघुक्रियाया वा बहूनि कार्याणि प्राप्नोति चेत् तादृशे प्रसङ्गे अस्य न्यायः उद्धर्तुं शक्यते ।

### 7. उष्ट्रलगुडन्यायः

उष्ट्रस्य पृष्ठभागे वस्तुनि स्थापयित्वा ये प्रवासं कुर्वन्ति ते तैः वस्तुभिः सह एकं लघुडम् अपि तस्य पृष्ठभागे स्थापयित्वा नयन्ति । सः उष्ट्रः वस्तुभिः साकं तं दण्डम् अपि वहति । परन्तु समये प्राप्ते ते जनाः तम् उष्ट्रं मारयितुं तस्य दण्डस्य उपयोगं कुर्वन्ति । वादेषु प्रतिपक्षिणा कथितया युक्त्या तस्य एव निरासः कृतः चेत् उष्ट्रलगुडन्यायः इति वदन्ति ।

### 8. श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्यायः

कश्चन भिक्षुकः भिक्षार्थं गृहम् आगच्छति तदानीं स्त्रिया भिक्षा नास्ति इति वदति । गृहात् निर्गच्छन्तं भिक्षुकं मार्गे श्वश्रूः पश्यति । पुनरपि तं गृहमाहूय अस्य गृहस्वामिनी अहम् अस्मि इदानीं किमपि न ददामीति वदन्ति अस्मि इतः निर्गच्छ इति तं प्रेषयति ।

सुलभतया कश्चन कार्यं कर्तुं शक्यते चेत् तत् त्यक्त्वा अन्येन मार्गेण करोति चेत् अस्य न्यायः वर्तते ।

### 9. पिष्टपेषणन्यायः

पिष्टं नाम चूर्णीकृतमेव पुनः पुनः पिष्यते चेत् किं फलम् ? एवम् अनावश्यकं व्यर्थं कार्यं सूचयति अयं न्यायः ।



10.अन्धगजन्यायः

एकदा कोऽपि अन्धः एकस्मिन् स्थाने उपविष्टः आसन् । तदा एकः मनुष्यः एकेन गजेन सह तत्र आगतः । सः तस्य गजस्य वर्णानं कुर्वन्तु इति तान् उक्तवान् । गजस्य यस्य अवयवस्य स्पर्शाः भवति सः गजः तादृशः इत्येव वर्णयितुं ते अन्धाः आरब्धवन्तः । गजः स्तम्भाकार इति एकः वदति चेत् , शूर्पाकार इति अपरः वदति । परन्तु तेषां दृष्टिः नासीत् इति कारणेन तस्य गजस्य साकल्येन वर्णानं कर्तुं ते असमर्थाः अभवन् । तथैव कस्यापि वस्तुनः पूर्णज्ञानं यस्य नास्ति सः तस्य अंशिकज्ञानस्य आधारेण तस्य वस्तुनः वर्णनं कुर्वन् एतत् पूर्णतः एतादृशमेव वस्तु भवेत् इति अवगच्छति ।

11. अरुन्धतीप्रदर्शनन्यायः

अरुन्धती-दर्शणनम् अस्य न्यायस्य संबन्धः विद्यते । विवाहस्य समये वधूवराभ्यां वसिष्ठतारा – दर्शनं कारयन्ति । तत्पूर्वम् अरुन्धती-नक्षत्रस्य दर्शनं कारयन्ति(वसिष्ठः अरुन्धती च दम्पती) लौकिकदम्पतीभ्यां अलौकिकदम्पत्योः दर्शनम् एवं कार्यते । उपदेशसमये अन्तिमलक्ष्यस्य अवान्तरलक्ष्याणाम् अपि उपदेशः क्रियते इति न्यायेन क्रमशः उपदेशः भवतीति अर्थः व्यज्यते । अरुन्धती-नक्षत्रस्य दर्शनसमये अपि अन्यस्य नक्षत्रस्य दर्शनं पूर्वं कार्यते ।

12.गुडुरिकाप्रवाहन्यायः

गुडुरिकानां कश्चन स्वभावः अस्ति । ते सर्वे सदैव समूहरूपेण चलन्ति । यः अग्रेसरः भवति तमेव सर्वे अपि अनुसरन्ति । सः यत्र गच्छति यथा गच्छति तत्र सर्वे अपि तथैव अनुसरन्ति । यदा अग्रेसरः गर्ते पतति तदा सर्वे अपि गर्ते एव पतन्ति । कोपि आत्मानं रक्षितुं प्रयत्नं न करोति । यत्र जनाः गतानुगतिकया अन्धः इव अग्रेसरन्तं अनुसरन्ति , अग्रगामिनाम् आचरणं अन्धः इव अनुसृत्य विषमस्थितौ पतन्ति तत्र एतत् गुडुरिकाप्रवाहन्यायं वक्तुं शक्यते ।

13.घट्टकुटीप्रभातन्यायः

घट्टकुटी इति सीमारक्षकाणां स्थानं भवति । तत् स्थानं परिहर्तुं कश्चन वाहनचालकः आरान्नि अपरमार्गेण गन्तुं प्रयत्नं कृतवान् । प्रभातकाले यदा सः दृष्टवान् तदा तस्य यानं घट्टकुटीस्थले एव प्राप्तमासीत् । महता प्रयत्नेनापि तस्य साफल्यं न भवति । प्रयुत यस्य सङ्कटस्य परिहाराय सः प्रयत्नः कृतः तदेव सङ्कटं पुनश्च संप्राप्तम् इति अनेन न्यायेन बोध्यते ।

14.घुणाक्षरन्यायः

काष्ठगतकीटकानां घुण इति नाम । ते कीटकाः काष्ठे स्थित्वा यथेष्टं तस्य छिद्राणि कुर्वन्ति । तानि छिद्राणि एकपङ्क्त्या दृष्यमानानि लिपिसदृशानि भवन्ति । एवं घुणाख्यकीटैः निर्मितानि अक्षरसदृशानि अनपेक्षितानि अर्थरहितानि च भवन्ति । एवं यत्र अस्माकं ज्ञानं विना अथवा विशेषप्रयत्नं विना किमपि सिध्यति तत्र घुणाक्षरन्यायस्य प्रयोगः क्रियते ।

15. कूपखानकन्यायः

कूपखननसमये कूपखानकस्य शरीरस्य उपरि धूलिः कर्दमश्च लगत्येव । परन्तु किञ्चित्कालानन्तरं कूपे यदा जलं जायते तदा तेनैव जलेन सः आत्मानं स्वच्छं कर्तुं शक्नोति । वेदान्तेऽपि अस्य न्यायस्य प्रयोगः एवं भवति यत् भेदबुद्ध्या उत्पन्नानां दोषाणां निराकरणं क्रमेण उत्पन्नया अभेदबुद्ध्या भवति इति ।

16. मात्स्यन्यायः

महान् मत्स्यः अल्पप्रमाणं मत्स्यं निगिलति । एवं बलवन्तः जनाः अल्पबलान् दुर्बलान् वा जनान् पीडयन्ति इति भावः ।

17. अशोकवनिकान्यायः

रामायणे कथयितया रीत्या ज्ञायते यत् रावणः सीताम् अपहृत्य लङ्कायाम् अशोकवने स्थापितवान् इति । सः ताम् अशोकवने एव किमर्थं स्थापितवान् अन्यत्र किमर्थं न इति प्रश्नस्य उत्तरं एव नास्ति । एकस्य कार्यस्य सिद्धयै बहवः उपायाः बहूनि साधनानि वा भवन्ति । एकः अपरः इव उत्तमः एव भवति । तत्र एकः एकम् उपायं स्वस्य इच्छानुसारं चिनोति । अयम् एव किमर्थं चितः इति तु वक्तुं न शक्यते । तस्य तस्य जनस्य इच्छा एव तत्र निर्णयं करोति ।

18. गुडजिह्विकान्यायः

किमपि कटु औषधं दातव्यं चेत् आदौ गुडं जिह्वायां स्थापयित्वा पश्चात् तत् कटु औषधं स्थापनीयम् । तेन तदो औषधस्य कटुत्वं न भाति । एवं कस्यापि अप्रियायाः सूचनायाः वेदनां साहयितुं आदौ प्रियवार्ता श्राव्यते इति अनेन बोध्यते ।

19. बकबन्धप्रयासन्यायः

बकं ग्रहीतुं अशक्यम् इति कष्टम् अनुभवन्ति, तदा तस्य शिरसि नवनीतं स्थापयित्वा, नवनीतं द्रवीभूय नेत्रदर्शनं तिरस्करोति तदा ग्रहीतुं शक्यते इति अर्थः । एवं कार्यस्य सिद्धयै विचित्रः उपायः चिन्तितः चेत् बकबन्धन्यायस्य प्रयोगः भवति ।

20. शतपलपलभेदनन्यायः

पद्मपत्राणां शतम् अपि एकसूचीभेदेन एकदा एव भिन्नं भवति । यतः तत् अतीव कोमलं भवति । यद्यपि एकदा एव पलशतस्य अपि भेदः जातः इति भाव्यते तथापि यथार्थतः एकैकस्य पलस्य अत्यन्तसूक्ष्मकाले भेदनं भवति खलु । एवं यत्र क्रमेण सुव्यवस्थित प्रकारेण आलोच्य बहूनि कार्याणि सरलतया कर्तुं शक्यते तत्र एषः न्यायः उच्यते ।

## सूक्तिः

1.सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः ।

तात्पर्यम्

संदिग्ध विषये सज्जनानां साक्ष्यं तेषां अन्तःकरणप्रवृत्तयः एव भवन्ति ।

2.मनो हि हेतुः सर्वेषां इन्द्रियाणां प्रवर्तने ।

तात्पर्यम्

मनः एव मनुष्याणां सर्वेषां इन्द्रियाणां प्रवर्तनाय हेतुकः भवति ।

3.भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

तात्पर्यम्

यत् भवितव्यम् अस्ति तस्य एव आरम्भं सर्वदा भवति, यतः सर्वत्र एषां भवितव्यानां प्रवेशाः एव भवन्ति ।

भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

4.अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तो अपि जनस्तिरस्तिक्रियां लभते

तात्पर्यम्

समर्थः अस्ति चदपि यः व्यक्तिः निरादरं प्राप्नोति सः स्वस्य शक्तिः अथवा सामर्थ्यं प्रकटयितुं न शक्यते ।

5. धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः

तात्पर्यम्

ये जनाः धर्मं ज्ञातुम् इच्छन्ति तेषां एकमालं श्रेष्ठं प्रमाणं वेदाः एव ।

6.तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम् ।

तात्पर्यम्

यः तस्य इन्द्रियाणां स्वयं स्थिर रूपेण करोति तत् कार्यं योगम् इति कथयते ।

7. वज्रादपि हि धीराणां चित्तरत्नमखण्डितम्

तात्पर्यम्

धीर पुरुषाणां चित्तं इव रत्नं वज्रात् अपि अधिकं सुदृढं भवति ।

8. वृत्तेन हि भवत्यार्यो न धनेन न दिद्यया

तात्पर्यम्

कदा एकः पूजनीयः भवति ? उत्तम चातिल्लियेन एव । विद्या वा धनं वा गौरवं न ददाति ।

9. अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः

तात्पर्यम्

अव्यवस्थित हृदयाणां(दुर्जनानाम् ) अन्येषां प्रति दयालुतापि भयोत्पादनं करिष्यति ।

10. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ॥

तात्पर्यम्

अयं वाक्यं कठोपनिशद्ब्रूदति (3/14) । हे मनुष्य ! उत्तिष्ठतु जागर्तु श्रेष्ठ (आचार्यान् ) प्राप्त्वा ज्ञानं प्राप्नोतु ।

11. सत्यार्जवे धर्ममाहुः परं धर्मविदो जनाः ॥

तात्पर्यम्

सज्जनाः वदन्ति यः स्वजीवने सत्यवन्तं शुद्धभावं च भूत्वा जीवनं करोति तत् एव तस्य श्रेष्ठं धर्मम् भवति ।

12. स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ॥

तात्पर्यम्

यः स्वीयेषु कार्येषु निरतः भवति सः एव मानवः सिद्धिं प्राप्नोति ।

## प्रहेलिका

1.पर्वताग्रे रथो याति भूमौ तिष्ठति सारथिः ।

चलते वायुवेगेन पदमेकं न गच्छति ।

अर्थः

- 1.पर्वताग्रे रथो याति-अत्र रथः इति कुम्भकारस्य चक्रं सूचयति । तत् चक्रं तल्लैव भ्रमति ।
- 2.भूमौ तिष्ठति सारथिः – अत्र सारथि इति पदं कुम्भकारं सूचयति । सः भूमौ तिष्ठ्वा चक्रं भ्रमयति ।
3. एतत् चक्रं वायु वेगेन भ्रमति । परन्तु अग्रे न गच्छति । तल्लैव भ्रमति ।

2.राजन् । कमलपलाक्ष । तत्ते भवतु चाक्षयम् ।

आसादयति यद्रूपं करेणुः कारणैः विना ॥

समाधानम्

उत्तरं :- अत्र करेणु शब्दः

क् + अ + र् + ए + ण् + उ एवं भवति

एतस्मिन् शब्दात् 'क् र् ण्' त्यक्त्वा (विना) पश्यति चेत् अ+ए+उः इति वर्णाः अवशिष्यते

अ+ए=ऐ इति रूपं भवति ऐ+उः=आय् (यान्तवान्तदेशसन्धिः)

आय्+उः = आयुः इत्यर्थः भवति ।

अतः श्लोकस्य अभिप्रायः - हे राजन् ! ते आयुः अक्षयं भवतु इति

3.विराजराजपुत्रारे: यन्नाम चतुरक्षरम् ।  
पूर्वार्धं तव वैरिणां परार्धं तव सङ्गरे ॥

अर्थः

वि-राज-राज-पुत्र-अरिः

विः = पक्षिः | विराजः = पक्षिराजः (गरुडः) | विराजराजः = गरुडस्य स्वामी (महाविष्णुः)

विराजराजपुत्रः = महाविष्णोः पुत्रः (मन्मथः) |

विराजराजपुत्रः - अरिः = मन्मथस्य शत्रुः (शिवः) |

विराजराजपुत्रारे: (शिवस्य) चतुरक्षरं नाम = मृत्युञ्जयः |

पूर्वार्द्धम् = मृत्युः → अरिः

परार्द्धम् = जयः → तव

4.प्रायेण निचलोकस्य कः करोतीह गर्वताम्

आदौ वर्णद्वयं दत्त्वा ब्रूहि के बनवासिनः

अर्थः

निकृष्टजनानां मनसि कस्मात् वस्तुनः गर्वतां करोति ?

तस्य आदौ वर्णद्वयं योज्यते तर्हि 'वनवासिनः' इत्येषः अर्थः भवेत् ।

किं तत्? राः (z) = धनम्

(z) पूर्वं वर्णद्वयं = (x+y) श, ब

(x+y) z = (श, ब) + राः = शबराः

द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, ऋक्थ, धन, वसु, हिरण्य, द्रविण, द्युम्न, अर्थ, रै, विभव, द्रविण, ग्रन्थ, साधन

5.राज्ञः सम्बोधनं किं स्यात्? सुग्रीवस्य तु का प्रिया?  
अधनास्तु कुमिच्छन्ति? आर्तैः किं क्रियते वद ॥

अर्थः

|                             |               |
|-----------------------------|---------------|
| राज्ञः सम्बोधनं किं स्यात्? | - देव         |
| सुग्रीवस्य तु का प्रिया?    | - तारा        |
| अधनास्तु कुमिच्छन्ति?       | - धनम्        |
| आर्तैः किं क्रियते वद       | - आराधनम्     |
| उत्तरम्                     | - देवताराधनम् |

6.पूजायां किं पदं प्रोक्तं किं वा पुरुषवाचकम्।  
क आयुधतया ख्यातः प्रलम्बासुरविद्विषः ॥

अर्थः

1. पूजायां सम्माननार्थं कस्यापि प्रशंसां क्रियते चेत् किं पदम् उपयुज्यते ? - सु (उत्तमं / सम्यक्)
2. पुरुषः इत्यर्थे किं पदम् उपयुज्यते ? - ना
3. प्रलम्बासुरस्य विद्वेषस्य (अरिः) अयुधस्य नाम किम्? - सीरः एक पदेन उत्तरम् - सुनासीरः (इन्द्रः)

7. वृक्षाग्रवासी न च पक्षिजातिः तृणं च शय्या न च राजयोगी  
आपीतवर्णो न च हेमधातुः अतश्च ताम्रः सुरसः क एषः ?

अर्थः

1. वृक्षाग्रे वसति - पक्षी न
  2. तृणे शेते - राजयोगी न
  3. पीतवर्णः - सुवर्णं न
- अतः ताम्रः - सुरसः (सम्यक् रस युक्तः)  
- त् + आ + म् + र् + अः = आम्रः



8.अपूर्वोऽयं मया दृष्टः कान्तः कमललोचने ।

शोन्तऽरं यो विजानाति स विद्वान्नाल संशयः

सामान्यार्थः

हे कमललोचने ! अहं सुन्दरं नूतनं च एकं पदं दृष्टवती । तस्य मध्ये 'शो' इति अस्ति । अस्य अर्थः यः जानाति सः

विशेषार्थः -

अपूर्वः = अ + पूर्वः = किम् अक्षरं पूर्वं भवति ? = अ

शोन्तऽरं = शो + अन्तरम् = मध्ये (अन्तरम्) कः वर्णः अस्ति ? = शो

कान्तः = क + अन्तः = अन्ते किं अक्षरं भवति ? = कः

तत् किम् ? = अशोकः

9.यजमानेन कः स्वर्गहेतुः सम्यग्विधीयते ।

विहायाद्यन्तयोर्वर्णौ गोत्वं कुलं स्थितं वद ॥

अर्थः

स्वर्गप्राप्त्यर्थं यजमानः किं करोति ? एतस्य उत्तरस्य आदि अन्तिम वर्णौ च त्यक्त्वा 'गोत्वम्' कुलं मिलति ?

समाधानम् :-

यजमानः किं करोति ? = यागम्

स्वर्गहेतुः किं करोति ? = ~~यागविधिः~~

आदि अन्तिम वर्णौ च त्यक्त्वा किं मिलति ? = गवि

10.का कान्ता कालियारातेः पुनरर्थे किमव्ययम् ।

किं वन्द्यं सर्वदेवानां फलेषु किम् सुन्दरम् ॥

विशेषार्थः

|   |   |             |
|---|---|-------------|
| कालियस्य शत्रोः विष्णोः पत्नी का (लक्ष्मीः) | = | मा          |
| अव्ययपदं 'पुनः' इति अर्थं बोधयति            | = | तु          |
| सर्वैः देवैः किं वन्द्यते (शिवलिङ्गः)       | = | लिङ्गम्     |
| फलेषु सुन्दरम् किम् ?                       | = | मातुलिङ्गम् |
| सर्वेषां पदानां एकपदेन उत्तरम्              | = | मातुलिङ्गम् |

## सन्धिच्छेदं प्रदर्शय प्रतिपदार्थं तात्पर्यम् च लिखत :-

1.i) दम्भेन लोभेन भिया हिया वा  
प्रायो विनीतो जन एष सर्वः ।  
वैराग्यस्तस्वाहृदयं विनीतं  
नरं वरं दुर्लभमेव मन्ये ॥

सन्धिः

|                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| प्रायः+विनीतः = विसर्ग सन्धिः | विनीतः+जनः = विसर्ग सन्धिः |
| जनः+एषः = विसर्ग सन्धिः       | एषः+सर्वः = विसर्ग सन्धिः  |
| वैराग्यतः+तु = विसर्ग सन्धिः  | तु+आहृदयम् = यण् सन्धिः    |

प्रतिपदार्थः

|           |               |          |                        |
|-----------|---------------|----------|------------------------|
| दम्भेन    | = कपटेन       | आहृदयं   | = संपूर्णं हृदयम्      |
| लोभेन     | = दुराशया     | विनीतम्  | = विनयान्वितम्         |
| भिया      | = भयेन        | नरम्     | = मनुष्यम्             |
| हिया      | = लज्जया      | वरम्     | = श्रेष्ठम्            |
| विनीतः    | = विनयान्वितः | दुर्लभम् | = प्राप्तुं बहु कठिनम् |
| वैराग्यतः | = विरागात्    | मन्ये    | = चिन्तयामि            |

तात्पर्यम्

सामान्यतः बहवः जनाः ते उत्तमाः इति प्रकटितुं कपटेन, दुराशया, भयेन, लज्जया वा विनयान्विताः भवन्ति ।  
विरागात् एषां संपूर्णं हृदयम् विनीतं भवति तादृशं श्रेष्ठं मनुष्यं प्राप्तुं बहु कठिनम् इति (अहं) चिन्तयामि ।

1.ii) यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।

एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति ॥

सन्धिः

हि + एकेन = यण् सन्धिः

गतिः + भवेत् = विसर्ग सन्धिः

दैवं + न = अनुस्वार सन्धिः

प्रतिपदार्थः

गतिः = गमनाय,

दैवम् = दैवानुग्रहम्,

पुरुषकारेण = मनुष्यस्य स्वप्रयत्नेन

सिद्ध्यति = प्राप्यते

तात्पर्यम्

यथा रथः एकेन चक्रेण गन्तुं न शक्नोति । रथस्य गमनाय नूनातिनूनं चक्रद्वयं आवश्यकम् । तथा मनुष्यस्य स्वप्रयत्ने विना, केवलं दैवानुग्रहेण सिद्धिः न प्राप्यते ।

2.i) दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

सन्धिः

भोगः + नाशः = विसर्ग सन्धिः

यः + न = विसर्ग सन्धिः

नाशः + तिस्रः = विसर्ग सन्धिः

गतिः + भवति = विसर्ग सन्धिः

तिस्रः + गतयः = विसर्ग सन्धिः

प्रतिपदार्थः

दानम् = पारितोषिकम्

भोगः = भोगम्

तिस्रः = त्रीणि

गतयः = मार्गाः

वित्तस्य = धनस्य

भुङ्क्ते = अनुभवति

तृतीया गतिः = तृतीय श्रेणिः

तात्पर्यम्

धनस्य तिस्रः मार्गः भवति । ते दानं, भोगः, विनाशः च इति । यः निर्धेभ्यः दानं न दाति, स्वयमपि तस्य उपयोगं न करोति तस्य तृतीया गतिः भवति अर्थात् नाशः एव भवति ।

2.ii) व्यसनानन्तरं सौख्यं स्वल्पमधिकं भवेत् ।

काषायरसमासाध्य स्वाद्वतीवाम्बुः विन्दते ॥

सन्धिः

व्यसन् + अनन्तरम् = सव.धी सन्धिः      अपि + अधिकम् = यण् सन्धिः

अतीव + अम्बु = सव.धी सन्धिः      स्वातु + अतीव = यण् सन्धिः

प्रतिपदार्थः

व्यसनानन्तरम् = दुःखदायकानुभवानन्तरम्

सौख्यम् = सुखम्

स्वल्पम् अपि = किञ्चित्पि

अधिकम् भवेत् = अधिकं भवति

काषायरसम् = काशायबानम्

आसाध्य = पानानन्तरम्

स्वादु = रुचिः

अतीव = बृहत्

अम्बु = जलम्

विन्दते = भवति

तात्पर्यम्

यथा काषायपानं पानानन्तरं किञ्चित् जलमपि मधुरं भवेत् तथा दुःखात् अनन्तरं किञ्चित् सुखमपि महत् इति भवेत् ।

3.i) शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः      यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ।

सुचिन्तितं चौषधमातुराणां      न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ॥

सन्धिः

शास्त्राणि + अधीत्य = यण् सन्धिः

यः + तु = विसर्ग सन्धिः

अधीत्य + अपि = स.दी सन्धिः

च + औषधम् = वृद्धिद सन्धिः

सः + विद्वान् = विसर्ग सन्धिः (लोपः)

करोति + अरोगम् = यण् सन्धिः

प्रतिपदार्थः

शास्त्राणि अधीत्य अपि = शास्त्रग्रन्थान् पठित्वा अपि । मूर्खाः भवन्ति = मूर्खत्वं प्राप्नुवन्ति ।  
 यः पुरुषः क्रियावान् = यः पुरुषः अतीतं कार्यरूपेण करोति । सः विद्वान् = सः पण्डितः ।  
 सुचिन्तितम् औषधम् = सम्यक् निर्मितं औषधम् । नाम-मात्रेण = नाम श्रुत्वा ।  
 आतुराणाम् अरोगं न करोति = रुग्णस्य रोगनिवारणं न भवति

तात्पर्यम्

केवलं शास्त्राध्ययनेन पुरुषानां मूर्खत्वं न गच्छति । प्राप्तं ज्ञानं उपयुज्य यदा पुरुषः कार्याणि करोति तदा एव विद्वान् भवितुम् अर्हति । औषधस्य स्वीकरणं विना, सर्वदा मनसि औषध-नाम-स्मरणं करोति चेदपि रुग्णस्य रोगनिवारणं न भवति । तथा केवलेन पठनेन विद्वान् भवितुम् न अर्हति ।

3.ii) आयत्यां गुणदोषज्ञः तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः ।

अतीते कार्यशेषज्ञो विपदा नाभिभूयते ॥

सन्धिः

कार्य-शेषज्ञः + विपदा = विसर्ग सन्धिः  
 गुणदोषज्ञः + तदात्व = विसर्ग सन्धिः  
 क्षिप्रनिः + शयः = श्रुत्व सन्धिः  
 न + अभिभूयते = सव.दी सन्धिः

प्रतिपदार्थः

आयत्याम् = भविष्यत् काले ।  
 गुणदोषज्ञः = यानि कार्याणि कर्तव्यानि तेषां सम्यक् विचार्य तत्र कः गुणः कः दोषः इति यः जानाति ।  
 तदात्वे = यत् कार्यं इदानीं कुर्वन् अस्ति तस्मिन् कार्ये ।  
 क्षिप्र-निश्चयः = जठिति निर्णयं करोति ।  
 अतीते = यत् कार्यं कृतम् ।  
 कार्य-शेषज्ञः = कार्ये शेषं करणीयं क्रिया किम् अस्ति इति यः जानाति,  
 विपदा नाभिभूयते = विपदः तं प्रति न आगच्छति ।

## तात्पर्यम्

- १) यत् कार्यं करणीयम् अस्ति, तस्य कार्यस्य श्रेष्ठ-अंशान् च दोषान् च यः जानाति,
  - २) यत् कार्यं इदानीं कुर्वन् अस्ति, तस्मिन् कार्ये किमपि विकल्प ज्ञानं भवति चेत् तत्क्षणे एव किं करणीयं इति निर्णयं कर्तुं यः समर्थः अस्ति,
  - ३) यत् कार्यं कृतं, तस्मिन् कार्ये शेषं करणीयं क्रिया किम् अस्ति इति यः जानाति,
- विपदः तं प्रति न आगच्छति । तस्य कार्यसिद्धिः एव सर्वदा भवति इति तात्पर्यार्थम् ।

4.i)यः प्रीणयेत्सुचरितैः पितरं स पुत्रो  
यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कललम् ।  
तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत्  
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥

## सन्धिः

- सः + पुत्रः = विसर्ग लोपः  
तत् + मित्रम् = अनुनासिक सन्धिः  
यत् + भर्तुः = जश्त्वसन्धिः  
पुण्यकृतः + लभन्ते = विसर्ग उकारः

## प्रतिपदार्थः

- |                    |                       |                      |                             |
|--------------------|-----------------------|----------------------|-----------------------------|
| 1.यः               | - कः                  | 8.तत् कललम्          | - सा एव पत्नी प्राप्नुवन्ति |
| 2.सुचरितैः         | - समुचित व्यवहारेण    | 9.आपदि सुखे च        | - विपक्तौ सुखे च            |
| 3.पितरं प्रीणयेत्  | -पितरं प्रसन्नं करोति | 10.समक्रियम्         | - समान रूपेण                |
| 4.सः पुत्रः        | -सएव सम्यक् पुत्रः    | 11.तत् मित्रम्       | - सः सखः                    |
| 5.यत्              | - या                  | 12.जगति              | - जीव लोके                  |
| 6.भर्तुः           | - पत्युः              | 13.पुण्यकृतः         | - पुण्यं कृतवान्            |
| 7. हितम् एव इच्छति | - हितम् इच्छति        | 14.एतत् त्रयं लभन्ते | - एतत् त्रयं प्राप्नुवन्ति  |

तात्पर्यम्

यः समुचित् व्यवहारेण पितरं प्रसन्न करोति सः एव सम्यक् पुत्रः(अस्ति) या पत्नी सदैव पत्युः हितम् इच्छति सा एव पत्नी ।तत् मिलं यत् विभक्तौ सुखेय अपि समान रूपेण व्यवहारं करोति । एतादृशः जनाः सर्वेषां कृते न लभन्ते । पुण्यकृतः एव लभन्ते

4. ii)प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते संभ्रमविधिः प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृते ।

अनुत्सेको लक्ष्यां निरभिभवसाराः परकथाः सतां केनोद्दिष्टं विशममसिधाराव्रतमिदम् ॥

सन्धिः

|                     |                     |               |
|---------------------|---------------------|---------------|
| च+अपि               | -चापि               | - सवर्ण दी.स. |
| अपि+उपकृतेः         | -अप्युपकृते         | - यण्         |
| अनुत्सेकः+लक्ष्याम् | -अनुत्सेकोलक्ष्याम् | - विसर्गः     |
| केन+उद्दिष्टम्      | - केनोद्दिष्टम्     | -गुण          |

प्रतिपदार्थः

- |  |   |
|--|---|
| 1.प्रच्छन्नं प्रदानम् - अन्येषां अज्ञात्वा दानम्   | 8.लक्ष्याम् अनुत्सेकः - संपद्भिः गर्वः न भवति |
| 2.उपगते - आगते                                     | 9.निरभिभवसाराः परकथाः - परनराणां न उल्लासनम्  |
| 3.संभ्रमविधिः - अतिथिसत्कारम्                      | 10.सताम् - सज्जनेभ्याम्                       |
| 4.प्रियं कृत्वा मौनम् - उपकारं कृत्वा तूष्णीं भवति | 11.केन उद्दिष्टम् ? - केन पाठिता              |
| 5.सदसि - सभायाम्                                   | 12.विषयम् - कार्यम्                           |
| 6.कथनम् - प्रकटनम्                                 | 13.असिधाराव्रतम् - खड्गस्य उपरि चलनामिव       |
| 7.उपकृतः - साहाय्यं कृतः                           | 14.इदम् - एतादृशम्                            |

तात्पर्यम्

यः दानं कृत्वा कथनं न करोति यः अतिथि सत्कारं करोति यः परोपरकारं कृत्वा तूष्णीं भवति यः साहाय्यकृतेः सभायां प्रकटनं करोति यः सम्पद्भिः गर्वः न भवति यः परनराणाम् उल्लासनम् न करोति, एतादृशः कटिनं कार्यं खड्गस्य उपरि चलनां इव, सज्जनेभ्यः एतादृश गुणाः केन पाठिताः (केनापि न उद्दिष्टम् स्वभावतः) एव सज्जनाः एतादृशाः भवन्ति



5.i) एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान् परित्यज्य ये  
सासान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ।  
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये  
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥

सन्धिः

सामान्याः + तु - सामान्यास्तु - वि.सकारः  
स्वार्था + अविरोधेन - स्वार्थाविरोधेन - स.दी  
ते + अमी - तेऽमी - पू.रू

प्रतिपदार्थः

|                         |                                |                      |                              |
|-------------------------|--------------------------------|----------------------|------------------------------|
| ये स्वार्थान् परित्यज्य | – ये स्वस्य कार्यान् त्यक्त्वा | ये स्वार्थाय         | – स्वकार्यसिद्ध्यर्थं        |
| परार्थघटकाः             | – ये अन्येषां कार्यं साधयन्ति  | परहितं निघ्नन्ति     | – ये अन्येषां हितम् नाशयन्ति |
| एते सत्पुरुषाः          | – एते उत्तमपुरुषाः             | ते अमी मानुषराक्षसाः | – ते मानुष राक्षसाः          |
| ये स्वार्थाविरोधेन      | – ये स्वकार्यस्य बाधः न भवेत्  | ये तु परहितं         | – ये तु परस्य हिताय          |
| परार्थम्                | – अन्येषां कार्यार्थम्         | निरर्थकं घ्नन्ति     | – कारणं विना नाशयन्ति        |
| उद्यमभृतः               | – परिश्रमं कुर्वन्ति           | ते के ? न जानीमहे    | – ते के ? न जानीमहे          |
| (एते) तु सामान्याः      | – ते सामान्य जनाः              |                      |                              |

तात्पर्यम्

ये स्वस्य कार्यान् त्यक्त्वा अन्येषां कार्यं साधयन्ति ते उत्तमपुरुषाः, ये स्वकार्यस्य बाधः यथा न भवेत् तथा  
अन्येषां कार्यार्थं परिश्रमं कुर्वन्ति ते सामान्य जनाः, ये स्वकार्यसिद्ध्यर्थं अन्येषां हितं नाशयन्ति ते मानुष  
राक्षसाः, ये तु परस्य हिताय कारणं विना नाशयन्ति ते के ? न जानीमहे – ते अत्यन्त अधमाः ।

5.ii)क्वचित्पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः  
क्वचिच्छाकाहारः क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः ।  
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो  
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ॥

सन्धिः

|                      |                     |                 |
|----------------------|---------------------|-----------------|
| क्वचित्+अपि          | क्वचिदपि            | जश्त्वम्        |
| क्वचित्+शाकाहारः     | क्वचिच्छाकाहारः     | जश्त्वम्/छत्वम् |
| दिव्याम्बरधरः+मनस्वी | दिव्याम्बरधरोमनस्वी | वि.उ            |

प्रतिपदार्थः

|                   |                   |                      |                            |
|-------------------|-------------------|----------------------|----------------------------|
| क्वचित्           | - कदाचित्         | कन्थाधारी            | - कन्थानि वस्त्राणि        |
| अपि च क्वचित्     | - अन्यस्मिन् समये | दिव्याम्बरधरः        | - दिव्यानि अम्बराणि        |
| मनस्वी कार्यार्थी | - चिकीर्षुः       | दुःखं सुखं च न गणयति | - दुःखं सुखं च न अनुभवन्ति |
| क्वचित्           | - कुत्रचित्       | पृथ्वीशय्यः          | - भूमौ शयनं करोति          |
| अपि च क्वचित्     | - अन्य स्थाने     | पर्यङ्कशयनः          | - मञ्चे शयनं करोति         |
| क्वचित्           | - कुत्रचित्       | शाकाहारः             | - अल्पाहारं                |
| अपि च क्वचित्     | - अन्यत्र         | शाल्योदनरुचिः        | - राजा इव भोजनम्           |

तात्पर्यम्

चिकीर्षुः कदाचित् भूमौ शयनं करोति, कदाचित् मञ्चे शयनं करोति, कदाचित् अल्पाहारं खादति, कदाचित् राजा इव भोजनं करोति, कदाचित् कन्थानि वस्त्राणि धरति, कदाचित् दिव्यानि अम्बराणि धरति तथापि कार्यं पूरयितुं सुखं वा दुःखं वा न अनुभवति ।

6.i) कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्तेः न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ।

अधोमुखस्यापि कृतस्य वह्नेः नाधः शिखा यान्ति कदाचिदेव ॥

सन्धिः

कदर्थितस्य + अपि = स.दीर्घ

अधोमुखस्य + अपि = स.दीर्घ

न + अधः = स.दीर्घ,

शिखाः + यान्ति = वि.स (लोपः),

कदाचित् + एव = जश्त्वसन्धिः

प्रतिपदार्थः

वह्नेः शिखाः = अग्नेः ज्वालाः

कदाचिदेव = कदापि

अधः न सन्ति = अधः न शक्यते

तात्पर्यम्

यः वस्तुतः धीरः निन्दितस्यापि धैर्यगुणः नाशयितुं न शक्यते । अग्नेः ज्वालाः कदापि अधः न शक्यते उपरि एव गच्छति ।

6.ii) नागुणी गुणिनं वेत्ति गुणी गुणिषु मत्सरी ।

गुणी च गुणरागी च विरलः सरलो जनः ॥

सन्धिः

न + अगुणी = सवर्णदीर्घसन्धिः,

सरलः + जनः = विसर्गसन्धिः (उत्त्वम्)

प्रतिपदार्थः

अगुणी गुणिनं न वेत्ति = दुष्टः गुणवन्तं न जानाति गुणी गुणिषु मत्सरी = गुण्यपुरुषः अन्यान् गुण्यपुरुषात् असूयति

गुणी च गुणरागी च = यः गुणवान् च गुणिनः प्रियं करोति सः सरलः जनः विरलः = सरलः जनः दुर्लभः एव

तात्पर्यम्

दुष्टः गुणवन्तं न जानाति, पुण्यपुरुषः अन्यान् पुण्यपुरुषात् असूयति, यः गुणवान् च गुणिनः प्रियं करोति सः

सरलः जनः दुर्लभः एव ।

7.i) सत्यं तपो ज्ञानमहिंसां च विद्वत्प्रणामं च सुशीलतां च ।

एतानि यो धारयते स विद्वान् न तत्र शास्त्राध्ययनं हि कारणम् ॥

सन्धिः

तपः + ज्ञानम् = वि.स (उकारः),

सः + विद्वान् = वि.स (लोपः),

यः + धारयते = वि.स (उकारः),

शास्त्र + अध्ययनम् = स.दीर्घ

प्रतिपदार्थः

|                 |   |                 |                      |                           |
|-----------------|---|-----------------|----------------------|---------------------------|
| यः              | - | यः परुषः        | सुशीलताम् च          | -सदाचारम्                 |
| सत्यम्          | - | सत्यकथनम्       | एतानि धारयते         | -यः आचरति                 |
| तपः             | - | तपः             | सः विद्वान्          | -सः एव विद्वान्           |
| ज्ञानम्         | - | ज्ञानम्         | तत्र शास्त्राध्ययनम् | -तत्र शास्त्रस्य अध्ययनम् |
| अहिंसाताम्      | - | अहिंसा          | न हि कारणम्          | - कारणं न भवति            |
| विद्वत्प्रणामम् | - | विद्वत्प्रणामम् |                      |                           |

तात्पर्यम्

सत्यं कथनं तपः ज्ञानम् अहिंसा विद्वत्प्रणामः सदाचारः (सुशीलता)

एतान् षड् गुणान् यः धारयते सः एव विद्वान् । तत्र शास्त्राध्ययनम् न हि कारणम् भवति ।

7.ii) करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता

मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम् ।

हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः

विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥

सन्धिः

श्लाघ्यः + त्यागः = विसर्गसन्धिः (सकारः), विना + अपि = सवर्णदीर्घसन्धिः,

भुजयोः + वीर्यमतुलम् = विसर्गसन्धिः (रेफः), अपि + ऐश्वर्येण = यणसन्धिः

**प्रतिपदार्थः**

|                           |                                     |                     |                    |
|---------------------------|-------------------------------------|---------------------|--------------------|
| श्लाघ्यः त्यागः करे       | - हस्तस्य त्यागः एव अलङ्कारः        | एश्वर्येण विना अपि  | - आभूषणानि विनापि  |
| गुरुपादप्रणयिता शिरसि     | - गुरोः पादयोः नमनं मस्तकस्य भूषणम् | महताम्              | - सज्जनानाम्       |
| सत्या वाणी मुखे           | - सत्यवचनमेव मुखस्य अलङ्कारः        | इदं प्रकृति मण्डनम् | - स्वभावेन शोभन्ते |
| अतुलं विजयि वीर्यं भुजयोः | - भुजयोः पराक्रमः अलङ्कारः          |                     |                    |
| स्वच्छा वृत्तिः हृदि      | - हृदयस्य अलङ्कारः पूतिः नीतिः      |                     |                    |
| अधिगतं श्रुतम् श्रवणयोः   | - कर्णयोः भूषणं अनुसञ्चरितं ज्ञानम् |                     |                    |

**तात्पर्यम्**

सज्जनानाम् अवयवानाम् आभरणानि एतानि भवन्ति । हस्तस्य भूषणं प्रदानम् । मस्तकस्य भूषणं गुरोः पादयोः नमनम् । वाकोः भूषणम् सत्य वचनम् ।

भुजयोः भूषणं पराक्रमम् । हृदः भूषणं पूतिः नीतिः । कर्णयोः भूषणम् अनुसञ्चरितं ज्ञानम् । आभूषणानि विना अपि स्वाभेण सज्जनाः शोभन्ते ।

8.i) आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं रात्रौ तदर्थं गतम् ।

तस्यार्धस्य परस्य चार्धमपरं बालत्ववृद्धत्वयोः ।

शेषं व्याधिवियोगदुःखसहितं सेवादिभिर्नीयते

जीवे वारितरङ्गचञ्चलतरे सौख्यं कुतः प्राणिनाम् । ।

**सन्धिः**

आयुः + वर्षशतम् = वि.स (रेफः),

तस्य + अर्धस्य = स.दीर्घ

च + अर्धम् = स.दीर्घ

सेवादिभिः + नीयते = वि.स (रेफः)

**प्रतिपदार्थः**

|          |                |             |                       |
|----------|----------------|-------------|-----------------------|
| नृणाम्   | -मनुष्याणाम्   | आयुः        | -जीवनम्               |
| वर्षशतम् | -शतवर्षम्      | परिमितं     | - इति निश्चितं भवति   |
| तदर्थम्  | -तत्र अर्धभागः | रात्रौ गतम् | -निद्रायां गतम् परस्य |

तस्य अर्धस्य अपरम् अर्धम् – अवशिष्टे अर्धे अर्धभागः

बालत्ववृद्धत्वयोः - बालावस्था ,वृद्धावस्थायां च गच्छति

शेषं व्याधिवियोगदुःखसहितम् सेवादिभिः नीयते - अवशिष्ट भागः अन्येषां सेवायां व्याधिवियोगादिदुःखैः च गच्छति  
वारितरङ्गचञ्चलतरे जीवे - तरङ्गः इव चञ्चल जीवने  
प्राणिनाम् सौख्यम् कुतः - प्राणिनां सन्तोषस्य अवसरः कुत्र अस्ति ?

### तात्पर्यम्

मनुष्याणां जीवन शतवर्ष इति निश्चितं भवति तत्र अर्धभागः निद्रायां गतम् । परस्य अवशिष्टे अर्धे अर्धभागः बालावस्था, वृद्धावस्थायां च गच्छति ।  
अवशिष्ट भागः अन्येषां सेवायां व्याधिवियोगादिदुःखैः च गच्छति । तरङ्गः इव चञ्चल जीवने प्राणिनां सन्तोषस्य अवसरः कुत्र अस्ति ? कुत्रापि नास्ति ।

8.ii)करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता  
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम् ।  
हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः  
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥

### सन्धिः

श्लाघ्यः + त्यागः = विसर्गसन्धिः (सकारः), विना + अपि = सवर्णदीर्घसन्धिः,  
भुजयोः + वीर्यमतुलम् = विसर्गसन्धिः (रेफः), अपि + ऐश्वर्येण = यणसन्धिः

### प्रतिपदार्थः

श्लाघ्यः त्यागः करे = हस्तस्य त्यागः एव अलङ्कारः गुरुपादप्रणयिता शिरसि = गुरोः पादयोः नमनं मस्तकस्य भूषणम्  
सत्या वाणी मुखे = सत्यवचनमेव मुखस्य अलङ्कारः अतुलं विजयि वीर्यं भुजयोः = भुजयोः पराक्रमः अलङ्कारः  
स्वच्छा वृत्तिः हृदि = हृदयस्य अलङ्कारः पूतिः नीतिः अधिगतं श्रुतम् श्रवणयोः = कर्णयोः भूषणं अनुसञ्चरितं ज्ञानम्  
ऐश्वर्येण विना अपि = आभूषणानि विनापि महताम् = सज्जनानाम्  
इदं प्रकृति मण्डनम् = स्वभावेन शोभन्ते

## तात्पर्यम्

सज्जनानाम् अवयवानाम् आभरणानि एतानि भवन्ति । हस्तस्य भूषणं प्रदानम् । मस्तकस्य भूषणं गुरोः पादयोः नमनम् । वाकोः भूषणम् सत्य वचनम् ।

भुजयोः भूषणं पराक्रमम् । हृदः भूषणं पूतिः नीतिः । कर्णयोः भूषणम् अनुसञ्चरितं ज्ञानम् । आभूषणानि विना अपि स्वाभेण सज्जनाः शोभन्ते ।

### 9.i) भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम्

माने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयम् ।

शास्त्रे वादिभयं गुणे खलभयं काये कृतान्ताद्भयम्

सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ॥

## सन्धिः

नृपालात् + भयम् = जश्चसन्धिः जरायाः + भयम् = विसर्गसन्धिः (लोपः)

कृतान्तात् + भयम् = जश्चसन्धिः एव + अभयम् = सवर्णदीर्घसन्धिः

## प्रतिपदार्थः

|                     |                               |                    |                                 |
|---------------------|-------------------------------|--------------------|---------------------------------|
| भोगे रोगभयम्        | - भोगाय रोगः भवति इति भयम्    | कुले च्युतिभयम्    | - उन्नतकुलाय मानभङ्गात् भयम्    |
| वित्ते नृपालाद्भयम् | - धनिकाय नृपालात् भयम्        | माने दैन्यभयम्     | - मानाय दीनतात् भयम्            |
| बले रिपुभयम्        | - शक्तियुक्तपुरुषाय शत्रुभयम् | रूपे जरायाः भयम्   | - सौन्दर्याय वृद्धावस्तात् भयम् |
| शास्त्रे वादिभयम्   | - पण्डिताय प्रतिपक्षेः भयम्   | गुणे खलभयम्        | - गुणज्ञाय दुष्टव्यक्तेः भयम्   |
| काये कृतान्ताद्भयम् | - शरीराय मृत्युभयम्           | भुवि               | - भूमौ                          |
| नृणाम्              | - मनुष्याणाम्                 | सर्वं वस्तु        | - सर्वाणि वस्तूनि               |
| भयान्वितम्          | - भययुक्तः                    | वैराग्यम् एव अभयम् | - वैराग्यमेव भयरहितम् भवति      |

## तात्पर्यम्

विषय भोगे रोग भयान्वितः इत्यर्थः । उत्तमकुलप्रसूतस्य केनापि प्रकारेण मम कुलाचारभ्रशः स्यादिति भीतिः वर्तते । धनिकाय नृपालात् भयम् । शक्तियुक्तपुरुषाय शत्रुभयम् । सौन्दर्याय वृद्धावस्तात् भयम् । पण्डिताय प्रतिपक्षेः भयम् । गुणज्ञाय दुष्टव्यक्तेः भयम् । शरीराय मृत्युभयम् । एतत् संसारे नृणाम् सर्वे वस्तु भयान्वितमेव । केवलं वैराग्यमेव निर्भयः भवति । अतः यः संसारे निर्भयः स एव धैर्यपुरुषः भवति ।

9.ii)आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरङ्गाकुला

रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यदुमध्वंसिनी ।

मोहावर्तसुदुस्तरातिगहना प्रोत्तुङ्गचिन्तातटी

तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः ॥

सन्धिः

विशुद्धमनसः + नन्दन्ति = विसर्गसन्धिः (उकारः)

प्रतिपदार्थः

|                         |  |
|-------------------------|--|
| आशा नाम नदी             | - आशा इति नदी                          |
| मनोरथजला                | - मनोरथः एव जलम्                       |
| तृष्णातरङ्गाकुला        | - लालसा एव तस्याः लहरी                 |
| रागग्राहवती             | - मोह रूप मकरः                         |
| वितर्कविहगा             | - लोभलिप्सा इव विहगाः                  |
| धैर्यदुमध्वंसिनी        | - एषा नदी धैर्य रूप वृक्षम् निष्कर्षति |
| मोहावर्तसुदुस्तरातिगहना | - गहना नद्यां अज्ञानम् इव आवर्तः       |
| प्रोत्तुङ्गचिन्तातटी    | - चिन्तारूपी उन्नत तटाः                |
| योगीश्वराः              | - योगीश्वराः                           |
| विशुद्धमनसः             | - निर्मलमनसः                           |
| तस्याः पारगताः          | - एषा नदीं पारगताः                     |
| नन्दन्ति                | - आनन्दं प्राप्नोति                    |

तात्पर्यम्

आशा इति नद्यां मनोरथः एव जलं , लालसा एव तस्याः लहरी, मोह रूप मकरः , लोभलिप्सा इव विहगाः, एषा नदी धैर्य रूप वृक्षं निष्कर्षति गहना नद्यां अज्ञानम् इव आवर्तः , चिन्तारूपी उन्नताः तटाः , योगीश्वराः निर्मलमनसाः एव एषा नदीं पारगताः । ते आनन्देन जीवन्ति ।



10.i) ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो

ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।

अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता

सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

सन्धिः

|           |   |          |   |                   |
|-----------|---|----------|---|-------------------|
| वाक्संयमः | + | ज्ञानस्य | = | वि.सन्धिः (उकारः) |
| ज्ञानस्य  | + | उपशमः    | = | गुणसन्धिः         |
| विनयः     | + | वित्तस्य | = | वि.सन्धिः (उकारः) |
| अक्रोधः   | + | तपसः     | = | वि.सन्धिः (सकारः) |
| प्रभवितुः | + | धर्मस्य  | = | वि.सन्धि (रेफः)   |

प्रतिपदार्थः

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता

- संपत्तेः भूषणं भवति समीचीन व्यवहारः

शौर्यस्य वाक्संयमः

- वीर्यस्य वचसां नियन्त्रणम्

ज्ञानस्य उपशमः

- ज्ञानस्य शान्तचित्तता

श्रुतस्य विनयः

- शास्त्राध्ययने विनम्रता

वित्तस्य पात्रे व्ययः

- धनस्य सत्पात्रे दानम्

तपसः अक्रोधः

- तपस्शक्तेः आभरणं अक्रोधव्यवहारः

प्रभवितुः क्षमा

- यत्र प्रतिभा अस्ति तत्र क्षमा एव भूषणम्

धर्मस्य निर्व्याजता

- धर्मस्य निष्कपटता

सर्वेषामपि

- सर्वेषां गुणानाम्

सर्वकारणम् इदम्

- एतदेव मूलभूतम्

शीलम्

- सद्भावः

परं भूषणम्

- श्रेष्ठं आभूषणम्

## तात्पर्यम्

मनुष्यस्य परं भूषणं शीलमेव इति अस्य सुभाषितं वर्तते । यत् ऐश्वर्यमस्ति तत् समीचीनव्यवहारः एव विभूषणं भवति । यत् वीर्यमस्ति तत् वचसां नियन्त्रणं आभरणं इति भवति । यत् ज्ञानमस्ति तत् शान्तचित्तता एव विभूषणं भवति । यत् शास्त्राध्ययं भवति तत् विनम्रता एव विभूषणं भवति । धनं यत् अस्ति तस्य सत्पात्रे दानं एव भूषणं भवति । तपस्शक्तिः या अस्ति तस्या आभरणं भवति अक्रोधव्यवहारः । यत् प्रतिभा अस्ति तत् क्षमा एव भूषणम् भवति । धर्मस्य निष्कपटता एव भूषणं भवति । एवं सर्वस्य कार्यस्य अपि एतत् शीलं सत्भावः एव अलङ्कारः भवति ।

10.ii) दिनयामिन्यौ सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।

कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥

## सन्धिः

|                    |                    |
|--------------------|--------------------|
| पुनः + आयातः       | = वि.सन्धिः (रेफः) |
| गच्छति + आयुः      | = यणसन्धिः         |
| मुञ्चति + आशावायुः | = यणसन्धिः         |

## प्रतिपदार्थः

|              |                              |
|--------------|------------------------------|
| दिनयामिन्यौ  | - अहर्निशम्                  |
| सायं प्रातः  | - सायं प्रातः च              |
| शिशिरवसन्तौ  | - शिशिर तथा वसन्त ऋतू        |
| पुनःआयातः    | - भूयो भूयो आगच्छन्ति        |
| कालः क्रीडति | - समयः क्रीडति               |
| आयुः गच्छति  | - वयः गच्छति                 |
| तत् अपि      | - तदपि                       |
| आशावायुः     | - आशा रूपी वायुः न परित्यजति |

## तात्पर्यम्

अहर्निशम्, सायं प्रातः, शिशिर तथा वसन्त ऋतू च भूयो भूयो आगच्छन्ति । समयः क्रीडति । वयः गच्छति । तदपि आशा रूपी वायुः अस्मान् न परित्यजति